कार्तिक-मार्गशीर्ष' वि.सं. २०८१, श्रीकृष्ण सं.५२५०

मासिक पत्रिका, नवम्बर २०२४ ई., वर्ष ०८, अंक ११

मान मन्दिर बरसाना

मूल्य १०/-

ब्रजयात्रा विशेषांक

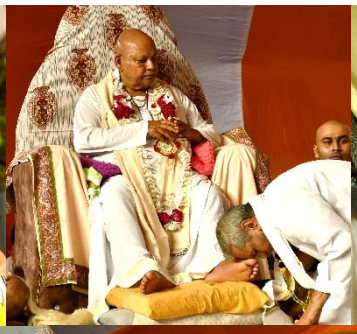

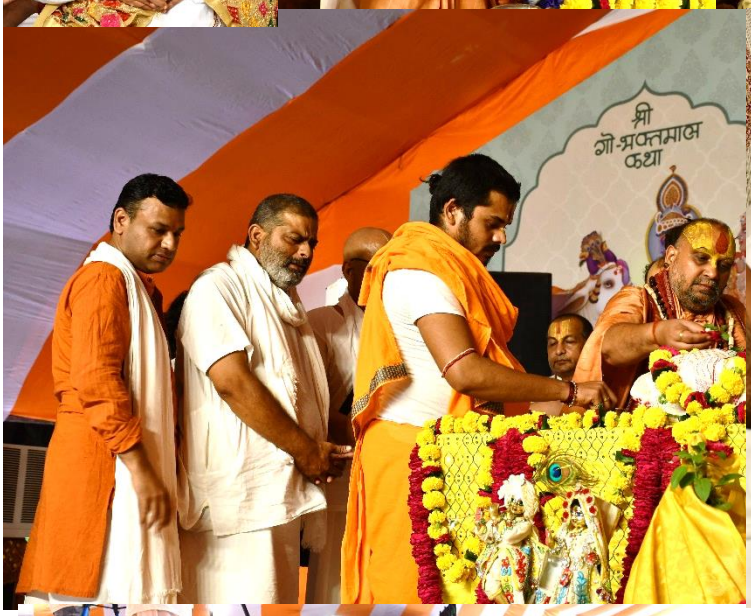

श्रीमाताजी गौशाला में सम्पन्न गौभक्तमाल-कथा महोत्सव के दृश्य

०२

अनुक्रमणिका

विषय- सूची पृष्ठ- संख्या

१ बाबाश्री की ब्रजसेवाराधना.....................................०५
२ ‘सहचरी’ स्वरूप ‘श्रीधाम’.......................................०८
३ राधापदकमल का श्रीवन पर प्रभाव............................१२
४ ‘राधा’ नाम से ‘रस’ प्राप्ति सहज...............................१६
५ गौ-वृद्धि से ही होगी सर्वसमृद्धि..................................१९
६ परममंगल मूल ‘गौमाता’...२३
७ बाबाश्री-स्तोत्रम्...२८
८ श्रीमुरलिकाजी द्वारा लिखित कथानक..........................२९
९ श्रीब्रजरज की असीम-अनुपम महिमा...........................३०
१० श्रीमाताजी गौशाला में सम्पन्न श्रीगौभक्तमाल कथा-महोत्सव ३२

|| राधे किशोरी दया करो ||

हमसे दीन न कोई जग में,
बान दया की तनक ढरो ।
सदा ढरी दीनन पै श्यामा,
यह विश्वास जो मनहि खरो ।
विषम विषयविष ज्वालमाल में,
विविध ताप तापनि जु जरो ।
दीनन हित अवतरी जगत में,
दीनपालिनी हिय विचरो ।
दास तुम्हारो आस और की,
हरो विमुख गति को झगरो ।
कबहूँ तो करुणा करोगी श्यामा,
यही आस ते द्वार पर्‌यो ।

INSTAAL करें ---
PLAY STORE से-----
MAANINI APP
बाबाश्री के
सत्संग/कीर्तन/भजन, साहित्य,
आदि यहाँ से FREE -
DOWNLOAD कर सकते हैं
व सुन सकते हैं ।

परम पूज्यश्री रमेश बाबा महाराज जी द्वारा सम्पूर्ण भारत को आह्वान –
“मजदूर से राष्ट्रपति और झोंपड़ी से महल तक रहने वाला प्रत्येक भारतवासी विश्वकल्याण के लिए गौ-सेवा-यज्ञ में भाग ले ।”
*** योजना ***
अपनी आय से १ रुपया प्रति व्यक्ति प्रतिदिन निकालें व मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक अथवा वार्षिक रूप से इकट्ठा किया हुआ सेवाद्रव्य किसी विश्वसनीय गौसेवा प्रकल्प को दान कर गौरक्षा कार्य में सहभागी बन अनन्त पुण्य का लाभ लें । हिन्दूशास्त्रों में अंशमात्र गौसेवा की भी बड़ी महिमा का वर्णन किया गया है ।

श्रीमानमंदिर की वेबसाइट www.maanmandir.org के द्वारा आप प्रातःकालीन सत्संग का ८.०० से ९:०० बजे तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६:०० से ८:०० बजे तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं ।

संरक्षक- **श्रीराधामानबिहारीलाल** , प्रकाशक – **राधाकान्त शास्त्री, मानमंदिर , गह्वरवन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.)**
mob. **राधाकांत शास्त्री** ....9927338666, Website :www.maanmandir.org , (E-mail :info@maanmandir.org)

विशेष:- इस पत्रिका को स्वयं पढ़ने के बाद अधिकाधिक लोगों को पढ़ावें जिससे आप पुण्यभाक् बनें और भगवद्-कृपा के पात्र बनें । हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है – **सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ । जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि ।।** (श्रीमद्भागवत३/७/४१)
अर्थ:- भगवत्तत्त्वके उपदेश द्वारा जीव को जन्म-मृत्यु से छुडाकर उसे अभय कर देने में जो पुण्य होता है, समस्त वेदों के अध्ययन, यज्ञ, तपस्या और दानादि से होनेवाला पुण्य उस पुण्य के सोलहवें अंश के बराबर भी नहीं हो सकता ।

प्रकाशकीय

श्रीब्रजभूमि के परमाराध्य व आराधक 'श्रीकृष्ण' को गायों से जितना प्रेम था, उतना किसी से नहीं । यही कारण था कि उन्होंने गिरिराज-पूजा कराई, गौपालन व गौचारण नंगे पैर किया । गोपाल के ब्रज में आज गायों की दुर्दशा से कोई अनभिज्ञ नहीं है । जिसे भारतवासी माँ कहते हैं, वही माँ आज घरों से बाहर दर-दर की ठोकर खाती भटकती है या मांसाहारियों द्वारा दर्दनाक मृत्यु को प्राप्त होकर अस्तित्व को खो रही है । संत हृदय नवनीतवत् होता है । इस कारण 'श्रीमानमन्दिर' के महाराजश्री ने गौरक्षा का विशेष अभियान २००७ में प्रारम्भ कर एक गौशाला की स्थापना "श्रीमाताजी गौवंश संस्थान" के रूप में की, जिसमें ब्रज की अनाथ गायें तो पलती ही हैं, इसके अतिरिक्त बाहर से भी गायें यहाँ आती रहती हैं । एकमात्र यह ऐसी गौशाला है जहाँ गायें आती हैं तो मना नहीं किया जाता । आज ये उत्तरप्रदेश की सबसे बड़ी गौशाला बन गई है, जिसमें लगभग ६५,००० गौवंश मातृवत् पल रहा है । गाय के गोबर, मूत्र के विविध उत्पादों के द्वारा ब्रजवासियों को धन से सम्पन्न बनाना, निरोग बनाना, अन्यान्य लाभ दिलाना यह भी संकल्प उक्त संस्था का है, जिस पर कार्य प्रारम्भ हो चुके हैं । 'ब्रजवासी, ब्रजभूमि, भगवान्' सभी का एक स्वरूप है, तीनों की सेवा लक्षित है । 'ब्रजवासी' वही है जो सतत् श्रीकृष्ण का स्मरण-चिन्तन करता है । ब्रजगोपियों के प्रत्येक कार्य में श्रीकृष्ण ही लक्ष्य होते थे । ऐसे ब्रज में आज आधुनिक परिवेश ने पुरातन स्वरूप को बिल्कुल मिटा दिया । इसे देखकर दयाद्रवित पूज्य श्रीरमेशबाबामहाराजजी ने गाँव-गाँव में 'श्रीभगवन्नाम' की अलख जगाने का बीड़ा उठाया । ब्रज एवं देश के लगभग ४०,००० गाँवों में भगवन्नाम की प्रभात फेरियाँ प्रारम्भ कराईं । इससे घर-घर चेतना फैली और कृष्ण-कीर्तन होने लगा । ब्रजसेवा के कार्यों में बाबाश्री की 'श्रीराधारानी ब्रजयात्रा' भी अपने में अलौकिक है । बाबा को यह अच्छा नहीं लगता था कि धनाभाव में कोई भावुक भक्त ब्रजयात्रा से वंचित रहे, इसके लिए उन्होंने सन् १९८८ से पूर्ण रूपेण निःशुल्क वार्षिकी ब्रजयात्रा प्रारम्भ की, जिसमें इस समय लगभग २०,००० ब्रजयात्री सम्मिलित होकर अपने भाग्य को सराहते हैं । यात्रियों के भोजन, आवास एवं उपचार आदि की समस्त सेवाएँ 'श्रीमानमन्दिर' द्वारा ही कराई जाती हैं । सतत् हरिनाम संकीर्तन से यात्रा का प्रत्येक क्षण, रस और प्रेम की अनुभूति कराता रहता है । ब्रज के दुरूह स्थलों की महिमा का उल्लेख प्रतिदिन नृत्य-आराधना के पश्चात् किया जाता है । यही यात्रा है जिसने जाने कितनों को श्रीराधामाधव का अनन्य उपासक बनाकर सांसारिक मोह-माया से सदा-सदा के लिए दूर कर दिया । ब्रह्मरज का अपभ्रंश ही ब्रजरज है अतएव 'रज में रज होय मिलूँ ब्रज में' इस आकांक्षा की पूर्ति हेतु अनेकानेक श्रीधाम के प्रेमियों ने यहाँ आजन्म 'विपिनराज सीमा के बाहर, हरिहू को न निहार' इस सुदृढ़ निष्ठा सहित वास किया । भगवान् का नाम, रूप, लीला, गुण, जन, धाम, धामी सब एक ही हैं । भगवान् का अवतार होता है तो सभी का 'धाम व उनके जनों का भी' अवतार होता है । धरा पर धामी के पूर्व धाम का अवतरण हुआ, धाम के साथ-साथ नन्द-यशोदा, वृषभानु-कीर्ति, सखा-समुदाय, समस्त परिकर का अवतार हुआ है । जिस प्रकार प्रेमिल एवं भावुक समाज नामी से नाम को श्रेष्ठ कहता है । उसी प्रकार सच्चे भावुक संत-भक्त 'धाम' को धामी से श्रेष्ठ मानते हैं । यह 'ब्रजमण्डल' मायातीत, कालातीत है; इसके आश्रय से मनुष्य भी कालातीत हो जाता है, सदा सुलभ होने से वैकुण्ठ से भी श्रेष्ठ है; इस ब्रजभूमि के लिए भगवान् अपना नित्य धाम वैकुण्ठ भी त्याग देते हैं ।

कार्यकारी अध्यक्ष

राधाकान्त शास्त्री

श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

बाबाश्री की ब्रजसेवाराधना

पं. श्रीरामजीलालशास्त्री, अध्यक्ष - श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान, अन्तर्राष्ट्रीय 'श्रीभागवत-व्यासाचार्य'

वन, उपवन, प्रतिवन, अधिवनों से आवृत यह ब्रजभूमि बड़ी रमणीय थी । भगवान् ने अपनी लीलाएँ किन्हीं भवनों में नहीं की बल्कि ये वन ही उनकी लीलाओं के केन्द्र थे । धीरे-धीरे सारे वन नष्ट हो गये, मात्र कुछ वन ही बचे थे, उन्हें भी भू-माफियाओं की कुदृष्टि लगी हुयी थी । ऐसे वनों में श्रीकिशोरीजी के निज करकमलों से लगाया हुआ 'गहवरवन' भी समाप्ति के कगार पर था परन्तु "श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान" के वीतरागी संत परमपूज्य श्रीरमेशबाबामहाराजजी ने ४६ वर्ष के संघर्ष के बाद बचाया । निरन्तर स्थानीय लोगों के भारी विरोध के बाद भी निष्ठा के साथ प्रयत्नशील बाबाश्री ने श्रीप्रकाशजी (राधाकान्त भैयाजी के पिताजी) जो तत्कालीन मानपुर ग्राम के प्रधान व बाबा के भक्त थे, जिनके द्वारा प्रस्ताव कराकर आरक्षित वन कराया और आज वह सरकारी विभाग (वन विभाग) के आधिपत्य में होने पर भी मानमन्दिर द्वारा पोषित है और बड़ी रमणीयता को प्राप्त हो रहा है । इसका संरक्षण कोई सहज में नहीं हुआ, निरन्तर ४६ वर्षों तक लोगों का विरोध सहना पड़ा और अन्त में श्रीजी ने ही इसकी रक्षा कराई, ऐसे ही अनेक वन रक्षित हुए; जैसे - पाण्डव गंगा (बठैन), नौबारी-चौबारी (डभारा), दर्शन वन, कलावटा (काम्य वन), आदि अनेक स्थलों में सघन वृक्षारोपण किया गया । आज सारे ब्रज में लाखों वृक्ष 'श्रीमानमन्दिर' द्वारा लगाए जा चुके हैं । श्रीराधाकृष्ण की लीलाओं के साक्षी अनेक सरोवर भी रहे, जिनमें वे स्नान करते । ब्रज में कितने कुण्ड थे यह तो कल्पनातीत है, अकेले नंदग्राम में ही ५६ कुण्ड थे, काम्यवन में ८४ कुण्ड थे । शनैः-शनैः कुण्ड भी लोगों की वासनाओं के शिकार होते गये ।

'श्रीमानमन्दिर' द्वारा ब्रज के अनेक कुण्डों का जीर्णोद्धार किया गया । ग्राम डभारा में तो कुण्ड के स्थल को खोजकर उसकी जमीन किसान से क्रय की गई फिर वहाँ 'रत्नकुण्ड' का पुनर्निर्माण हुआ । निम्न कुण्डों एवं सरोवरों का जीर्णोद्धार 'श्रीमानमन्दिर' द्वारा हुआ – रत्न कुण्ड (डभारा), ग्राम धमारी का कुण्ड, विह्वल कुण्ड (संकेत), गोमती गंगा (कोसी कलां), कृष्णकुण्ड (नन्दगाँव), ललिता कुण्ड (कमई), बिछुवा कुण्ड (बिछोर), लोहरवारी कुण्ड, गया कुण्ड (काम्यवन), नयन सरोवर (सेऊ), लाल कुण्ड (दुदावली), बिछुआ कुण्ड (जतीपुरा), गोपाल कुण्ड (डीग), मेंहदला कुण्ड (हताना), रूद्र कुण्ड (जतीपुरा) ।

ब्रज के दिव्य पर्वतों की भी संरक्षा का संप्रयत्न श्रीबाबामहाराज की कृपा-सन्निधि में हुआ । ब्रज में यों तो त्रिदेव, पर्वतों के रूप में विराजमान हैं । गोवर्द्धन में गिरिराजजी स्वयं विष्णु भगवान् बने हैं, नन्दगाँव में शंकरजी नन्दीश्वर पर्वत तथा बरसाना में ब्रह्माजी ब्रह्माचल पर्वत, इसके अतिरिक्त अष्टकूट, आदिबद्री, कनकाचल, सखी गिरि, रंकु पर्वत आदि अनेक पर्वतों के रूप में देवगण अवतरित हैं । इन पर्वतों पर खनन माफियाओं की ऐसी कुदृष्टि हुई कि अत्याधुनिक मशीनों तथा विस्फोटकों से इन्हें नष्ट किया जाने लगा । 'श्रीमानमन्दिर' द्वारा इन सबका विरोध हुआ परन्तु धनाढ्य व मदान्ध माफियाओं ने 'ब्रजलीला के साक्षी व केन्द्र' इन पर्वतों के धार्मिक व ऐतिहासिक महत्व को न समझकर सरकारी तन्त्र के साथ मिलकर धन के बल पर नष्ट करने का प्रयत्न पूरी शक्ति के साथ किया । ईश्वरीय-शक्ति से आज तक कौन जीत पाया है । सखीगिरि पर्वत पर ब्रजरक्षक संत श्रीरमेशबाबामहाराज ने अनशन प्रारम्भ कर ब्रज के दिव्य पर्वतों की रक्षा का संकल्प लिया । यद्यपि पचास वर्ष पूर्व भी उत्तरप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीसम्पूर्णानन्द से मिलकर ब्रज के खनन को बन्द कराया था, परन्तु वर्तमान संघर्ष ने सारे ब्रज को ही नहीं अपितु राज्य सरकारों तक को झकझोर दिया था । अंत में ५२३२ हेक्टेयर भू-भाग को आरक्षित वन क्षेत्र घोषित कराकर ब्रज रक्षा का महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किया ।

इसमें कई भक्तों ने अपनी जान जोखिम में डाल कर बड़ी-बड़ी विपत्तियों का सामना किया क्योंकि ब्रजभूमि की लीलास्थलियाँ उनको प्राणों से भी अधिक प्रिय थीं। उनका संरक्षण किसी आराधना से कम नहीं था। श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान 'श्रीयमुनाजी' को पुनः ब्रज में अपने वास्तविक जल-प्रवाह के रूप में लाने का सतत् प्रयास कर रहा है । 'यमुनाजी' के बिना तो ब्रज की महारानी 'श्रीराधा' ने भी धराधाम पर आना स्वीकार नहीं किया था । ऐसी

पतितपावनी यमुनामहारानी आज ब्रज में हैं ही नहीं । यह बात ब्रज में अज्ञात थी, इस पर भी 'श्रीमानमन्दिर' द्वारा शोध कार्य किया गया । प्रयाग से दिल्ली तक पदयात्रा कर जनचेतना जागृत की गई । हथिनीकुण्ड (हरियाणा) में यमुनाजी को रोक लिया गया है । १४० कि.मी. तक एक बूँद भी यमुनाजल यमुना तल पर नहीं रहता । ब्रज में दिल्ली का मल-मूत्र ही आता है । कभी यमुना के निर्मल जल से सारा ब्रज पोषित था लेकिन आज वह जल विषरूप हो गया है ।

'श्रीमानमन्दिर' से यमुनाजी को लाने का बड़ा भारी प्रयत्न हुआ । लाखों ब्रजवासियों, भक्तों, श्रद्धालुओं द्वारा दिल्ली तक पदयात्रा हुई परन्तु सरकारी आश्वासनों ने संकल्प पूर्णरूपेण पूर्ण होने नहीं दिया परन्तु बाबाश्री का संकल्प भविष्य में अवश्य पूर्ण हो जायेगा, ऐसा विश्वास है क्योंकि आज तक उनका कोई संकल्प अधूरा नहीं रहा । भगवल्लीलाओं की प्रमुख केन्द्र यमुनामहारानी हैं ।

श्रीकृपा-शक्ति के आगे जड़ भी जड़ नहीं रह जाता । पूज्य गुरुदेव श्रीबाबामहाराज की कृपा ने कितनों को पुष्ट किया, देखो – सन् १९८८ से चल रही 'श्रीराधारानी ब्रजयात्रा', ब्रजदेश-जिज्ञासुओं के लिए वर स्वरूप बन गई । ब्रज की गरिमा-महिमा से अनभिज्ञ जिज्ञासुओं का अभीष्ट बन गई । स्थान-स्थान पर श्रीगुरुदेव द्वारा माहात्म्य बोध तो हो ही जाता है पुनरपि ब्रजरसिकजनों का प्रेमिल-हृदय यात्रा-सम्बन्धी पुस्तक के लिए बराबर आग्रह करने लगा । प्रत्येक बार "अग्रिम यात्रा में उपलब्ध हो जायेगी" कहकर यात्रियों को रिक्त-हस्त लौटा दिया जाता । ग्रन्थ-प्रकाशन का कर्म-क्षेत्र विशाल एवं दुरूह था किन्तु गुरुकृपा-शक्ति ने दुर्गम को भी सुगम कर दिया एवं भावनाशील भावुक भक्तों के भगवत्परक भावों का भरण करते हुए यह यात्रा सम्बन्धी लीला-स्थल बोधक ग्रन्थ प्रदान कर समयोचित उपकार किया । श्रीगुरुकृपा-शक्ति ने ही लेखन का यह दुर्गम कार्य किया है, अतः कथन में संकोच नहीं कि "रसीली ब्रज यात्रा" ग्रन्थ स्व-स्व मत व स्व-स्व साम्प्रदायिक संकीर्ण बुद्धि के आग्रह से सर्वथा शून्य है । अस्मिता-युक्त मान्यता-मुक्त होने से सर्वविध सत्य के प्रकाशन का ही इसमें प्रयास है चूँकि सर्वसाधारण इससे अवगत हो कि अस्मिता व पूर्वाग्राही जनों ने आज लीलास्थल-माहात्म्य को भ्रामक बना दिया, युगल की अलौकिक लीलाएँ मात्र कल्पना बन कर रह गईं जन-मन में । सम्प्रदायों के एक ही इतिवृतों में ध्रुवीय अन्तराल आ गया । मूल लीलाओं को विवादात्मक बनाने का प्रयास किया गया । यथा – राधाकृष्ण-विवाह प्रामाणिक नहीं है, राधा-जन्म बरसाने में नहीं हुआ है, जाववट स्वकीया-स्थल नहीं है इत्यादि । तत्-तत् समस्त भ्रामक विवादों के निरसन निमित्त ग्रन्थ में प्रामाणिक बातों का ही उल्लेख है । "हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता" अनन्त की अनन्तानन्त लीलाओं के वर्णन को अनन्त शब्द कहाँ से लायें ? लीलाओं को शब्द-परिधि में बाँधना भी सम्भव नहीं, अतः ग्रन्थ के शब्द व अक्षर ससीम सम्भव हैं किन्तु वर्णित लीला निःसीम युगल तत्व में अवस्थित करा देने वाली निश्चित है । 'श्रीराधारानी ब्रजयात्रा' के जनक (ब्रजविभूति श्रीश्री रमेशबाबाजीमहाराज) पूज्य गुरुदेव द्वारा ब्रज की लुप्त निगूढ़ लीला स्थलियों का प्राकट्य हुआ, जिनके विषय में और तो और ब्रजवासी भी अनभिज्ञ थे, ऐसे उन निर्जन-लीला-स्थानों के अन्वेषण का कठिन प्रयास पूज्य श्रीसद्गुरुदेव के द्वारा ही हुआ । जैसे – रासौली (जिसका वर्णन जीवगोस्वामीजी ने भागवत १०/२९/३ की टीका में किया है), बदरौला टीला (सूर सागर में कथा वर्णित है), सौगन्धिनी शिला, विन्ध्याचल गिरि, गन्धमादन गिरि .....अधिक कहना आवश्यक नहीं क्योंकि इन सभी लीला-स्थलियों की प्रामाणिक कथा "रसीली ब्रजयात्रा" में दी गई है । ब्रजयात्रा के इतिहास पर घिरे हुए अनेकानेक मतभेद, साम्प्रदायिक संकीर्णता के धूम को हटाकर निर्धूम यथार्थ का साक्षात्कार कराने की दृष्टि से सर्वविध प्रभावों, प्रमाणों की कसौटी पर कसकर यह परिशुद्ध ग्रन्थ जिज्ञासु अध्येतागणों को पहुँचाने का प्रयास किया गया है, जिससे वे स्थान-सम्बन्धी समस्त लीलाओं में निर्बाध प्रवेशाधिकार प्राप्त कर लें । यद्यपि ग्रन्थ भगवत्परक होने से सर्वरूपेण आस्वाद्य है, भगवत्प्रेमरस से सराबोर होने से इसका नाम "रसीली ब्रजयात्रा" होना नैसर्गिक ही है । जिज्ञासु भक्तजन कैसे यात्रा करें ? प्रतिपादित नियमों का संयम से पालन करें – (१) भगवान् भक्तों की सरलता एवं भोलेपन पर रीझते हैं । सांसारिक चतुराई को घर पर छोड़ कर आयें एवं इस भाव से यात्रा करें कि प्रभु हम पर रीझ जाएँ ।

धाम में जन्म होना, इस धाम की प्राप्ति होना; यह केवल राधारानी की कृपा से ही सम्भव है ।

(२) प्रत्येक यात्री में कृष्ण होने का भाव रखें ।

(३) सुख-सुविधाओं को छोड़कर यात्रा करें । कार या बस से यात्रा करना यात्रा नहीं है वरन् एक रजोगुणी देशाटन है । पैदल तथा हो सके तो नंगे पाँव यात्रा करें । ब्रजभूमि का कंकड़, पत्थर और काँटा भी आपके पाँव में चुभे तो उस लक्ष कोटि आनन्द की प्राप्ति कहीं सम्भव नहीं है । यह वही ब्रजभूमि है जहाँ राधामाधव एवं सखा नंगे पाँव खेला करते थे और गोचारण के लिये जाते थे ।

(४) यह धाम चिन्मय है एवं हमारे प्राकृत चक्षुओं से इसका नित्य स्वरूप नहीं दिखाई पड़ता । आसपास फैली गंदगी से विचलित न होवें तथा धाम में साफ-सफाई रखें तथा स्वयं गन्दगी का कारण न बनें ।

(५) कटु शब्द न बोलें । क्रोध न करें । यात्रियों से धक्का-मुक्की न करें ।

(६) लीलास्थली पर जाने से पूर्व इस ग्रन्थ के लीला सम्बन्धित अध्याय को पढ़ें तथा लीला-चिन्तन करें ।

(७) यात्रा में २४ घंटे भगवन्नाम-कीर्तन होता है । यात्रा करने आये हैं तो व्यर्थ की बात न करें और निरन्तर नाम में रुचि, आस्था एवं भाव रखें ।

(८) अध्याय 'धामोपासना' के अनुसार यात्रा में तीन बार स्नान का नियम है । पवित्र कुण्डों में यथाशक्ति स्नान करें । यदि समयाभाव के कारण ऐसा न हो सके तो ब्रज की रज में लोट लगायें । यह आचार्यों की आज्ञा है । उत्तम यह है कि उस ब्रजरज में लोटें जहाँ भक्तों ने नृत्य किया हो ।

(९) स्त्रियों का मासिक धर्म यात्रा में व्यवधान नहीं है । ब्रज की रज में लोटें और भगवन्नाम में निरन्तर मग्न रहें । 'भगवन्नाम' ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, म्लेच्छ, श्वपच, चाण्डाल और नीच से भी नीच प्राणी को सुलभ है तथा इसमें कोई रोक टोक नहीं है ।

(१०) इस ग्रन्थ में ब्रज की लीलास्थलियों, मन्दिरों, कुण्डों, पर्वतों एवं ऋषिस्थलों के प्रार्थना, आचमन एवं दर्शन-मन्त्रों का उल्लेख है; ये सब जाग्रत मन्त्र हैं और इनका चमत्कार प्रत्यक्ष दिखाई देता है ।

महीभानुसुतायैव कीर्तिदायै नमो नमः । सर्वदा गोकुले वृद्धिं प्रयच्छ मम कांक्षिताम् ॥ (ब्रजभक्तिविलास)

श्रीराधारानी ब्रजयात्रा के समय पूज्य बाबामहाराज 'बरसाने' के पड़ाव में यह मन्त्र बुलवाते हैं और उसका चमत्कार यह है कि आज श्रीमाताजी गौशाला में लगभग ६५,००० गौवंश है । इसलिये श्रद्धापूर्वक भावनाओं से संयुक्त हो इन मन्त्रों का आह्वान ग्रन्थानुसार तत्-तत् लीला स्थलों पर पहुँच कर करें ।

(११) उपरोक्त बाह्य नियमों के पालन का औचित्य तभी है जब अंतर्नियमों का पालन भी हो रहा हो । जैसे जीव तीन बार स्नान तो कर रहा है परन्तु नेत्रों से विषयों को भी ग्रहण कर रहा है, इस मिथ्या आचरण से बचें, हम प्रभु को धोखा नहीं दे सकते ।

(१२) ब्रजयात्रा एक महायज्ञ है, जिसमें भगवन्नाम की बहुलता है, इस नाम से जन्म-जन्मान्तरों के पाप कटते हैं । उस अनन्त को प्राप्त करने के लिये एक जीव क्या साधन कर सकता है ? जीव 'भगवन्नाम' ले सके, यह सिर्फ महापुरुषों की महती कृपा से ही प्राप्त होता है । अतः इस यात्रा का सम्पूर्ण आनन्द लें और सुधि पाठकगण दत्तचित्त होकर ग्रन्थ 'रसीली ब्रजयात्रा' को पढ़ें व अधिकाधिक लीला का लाभ प्राप्त करें ।

'सहचरी' स्वरूप 'श्रीधाम'

बाबाश्री द्वारा कथित श्रीराधासुधानिधि-सत्संग (२९/८/२०००) से संकलित

उज्जागरं रसिकनागर..... । (श्रीराधासुधानिधि – १६)

प्रस्तुत श्लोक में लाड़ली-लाल की सेवा का क्रम चल रहा है । सेवा ही जीव का मुख्य धर्म है और सेवा से ही भगवान् सन्तुष्ट होते हैं । **यद् वृत्त्या तुष्यते हरिः –** (श्रीभागवतजी ३/६/३३) । जिसने सेवा करना सीख लिया, वह श्रीभगवान् को पा गया । इसीलिए अष्टयाम पद्धति सबके लिए ध्येय बतायी गयी । जिसमें मंगला की चर्चा हो चुकी है, अब वनविहार लीला का प्रसंग चल रहा है । वन में दोनों प्रिया-प्रियतम विहार करते हैं । उस वन का स्वरूप उनकी कृपा से ही स्फुरित होता है । वन (वृन्दावन) राधारानी का ही स्वरूप है । इस भाव का श्लोक भी राधासुधानिधि में लिखित है –

रोमालीमिहिरात्मजा सुललिते बन्धूकबन्धुप्रभा सर्वाङ्गे स्फुटचम्पकच्छविरहो नाभीसरः शोभना ।
वक्षोजस्तवका लसद्भुजलता शिञ्जापतच्छुङ्कृतिः श्रीराधा हरते मनो मधुपतेरन्येव वृन्दाटवी ॥ (राधासुधानिधि – १७८)

राधारानी ही वृन्दाटवी हैं । ऐसा भाव इस श्लोक में लिखा है । यह भूमि भी सहचरी रूपा है । ब्रजगोपियों ने श्रीकृष्णान्वेषण के समय इस भूमि को सहचरी रूप में ही देखा था । यह केवलमात्र ब्रज रसिकों की ही भावना नहीं है अपितु ब्रजगोपियों की अनुभूति है, जिसको शुकदेवजी ने भागवत में स्पष्ट कहा है कि यह भूमि सहचरी रूपा है । इसीलिए इसकी अधिष्ठात्री वृन्दा देवी भी यूथेश्वरी हैं । सब कुछ जहाँ सहचरी रूप है । सहचरीरूपा होने के कारण ही जिस वृन्दावन का गोपियों को दर्शन हुआ था, जब वे श्रीकृष्णान्वेषण कर रही थीं, वह सजा-सजाया हुआ सहचरी रूप था । रासलीला के मध्य में श्रीकृष्ण के अन्तर्धान होने पर प्रेम से मदमत्त गोपियाँ श्यामसुन्दर को ढूँढ रही थीं । उस समय उन्हें आत्मविस्मृति हो गयी थी और प्रेमोन्माद की अवस्था में वृक्षों-लताओं से वे श्रीकृष्ण के बारे में पूछ रही थीं ।

दृष्टो वः कच्चिदश्वत्थ प्लक्ष न्यग्रोध नो मनः । नन्दसूनुर्गतो हृत्वा प्रेमहासावलोकनैः ॥ (श्रीभागवतजी १०/३०/५)

हे वट वृक्ष ! हे पाकड़ ! क्या तुमने नन्दनन्दन को देखा है ? वे हमारे मन को चुराकर चले गये हैं अर्थात् क्या तुमने हमारे चितचोर को देखा है ?

कच्चित् कुरबकाशोकनागपुन्नागचम्पकाः । रामानुजो मानिनीनामितो दर्पहरस्मितः ॥ (श्रीभागवतजी १०/३०/६)

किसी का पता पूछा जाता है तो उसकी हुलिया बतायी जाती है कि ऐसी उसकी पहचान है । गोपियाँ अशोक वृक्ष से कहती हैं – तुम्हारा नाम अशोक है । तुम शोक को हरण करते हो । बलदाऊ के छोटे भ्राता की यह पहचान है कि कोई मानिनी कितना भी मान कर लेती है, यदि उसको अपने रूप-गुण का मान है तो उसके मान को हरण करने के लिए श्रीकृष्ण की मुस्कुराहट ही काफी है । क्या तुमने उनको देखा है ? इसके बाद गोपियाँ तुलसी से पूछती हैं –

कच्चित्तुलसि कल्याणि गोविन्दचरणप्रिये । सह त्वालिकुलैर्बिभ्रद् दृष्टस्तेऽतिप्रियोऽच्युतः ॥ (श्रीभागवतजी १०/३०/७)

हे तुलसी ! गोविन्द तुम्हारी माला को सदा धारण करते हैं । क्या तुमने उनको देखा है ?

यह निश्चित है कि श्रीकृष्ण इधर से गये हैं क्योंकि नन्ददासजी कहते हैं – **'बिन पिया परस अस फूल न होई ।'** गोपियाँ लताओं से पूछती हैं कि तुम्हारे अन्दर इतने अधिक पुष्प हैं, तुम फूलों से लदी हुई हो । आमूलचूल पुष्प हैं । बिना युगल सरकार के दर्शन के या उनके अंग स्पर्श के बिना इतने अधिक पुष्प हो नहीं सकते हैं ।

मालत्यदर्शि वः कच्चिन्मल्लिके जाति यूथिके । प्रीतिं वो जनयन् यातः करस्पर्शेन माधवः ॥ (श्रीभागवतजी १०/३०/८)

तुमने देखा ही नहीं, तुमको श्रीकृष्ण ने छुआ है । उनके स्पर्श से तुम पुलकित हो रही हो । ये है सहचरी भाव । गोपियों को सारा वन सहचरी के रूप में दिखायी पड़ रहा है । जैसे एक सुन्दर नवोढा नायिका अपने प्रियतम (कान्त) के स्पर्श से पुलकित होती है, रोमांचित होती है । उसी प्रकार गोपियाँ लताओं से कहती हैं कि बिना परम प्रियतम श्रीकृष्ण के स्पर्श के तुम्हारे भीतर पुष्प रूपी पुलक हो ही नहीं सकती है । तुम्हारे अन्दर इतने अधिक जो पुष्प हैं, वे यही दिखाते हैं कि तुमको श्रीकृष्ण का स्पर्श प्राप्त हुआ है । वृक्षों से भी गोपियाँ यही कहती हैं कि तुम्हारे अन्दर जो श्री है, वह श्रीकृष्ण से

आई है । इसके बाद अब वही श्लोक आता है, जिसकी चर्चा चल रही है कि गोपियों को वृन्दावन सहचरी के रूप में दिखाई पड़ा, यद्यपि शब्दों में हिन्दी में इसका प्रयोग पुल्लिग में होता है । जैसे 'वन' शब्द का संस्कृत में प्रयोग नपुंसक लिंग में होता है किन्तु यह तो शब्द है । शब्द शास्त्र अलग है । 'दारा' का अर्थ स्त्री होता है और संस्कृत में 'दारा' शब्द का रूप पुल्लिग की तरह चलता है । अब स्त्रीवाची शब्द पुल्लिग में चलता है, यह तो व्याकरण शास्त्र का विषय है । इसको इसलिए बताया क्योंकि संस्कृत व्याकरण में लिंग विपर्यय भी हो जाता है जैसे आपका मित्र कोई पुरुष है तो संस्कृत में मित्र शब्द नपुंसक लिंग में चलता है, जबकि मित्र नपुंसक तो नहीं होता है । चाहे स्त्री मित्र है चाहे पुरुष मित्र है, संस्कृत में उसके लिए नपुंसक लिंग चलेगा । इसलिए यहाँ शब्द शास्त्र की बात नहीं है । शब्द शास्त्र से आगे की बात बताई जा रही है । जब गोपियों ने वृन्दावन को देखा तो उन्हें उसका दर्शन सहचरी रूप में हुआ और उन्होंने कहा –

'किं ते कृतं क्षिति तपो बत केशवाङ्घ्रिस्पर्शोत्सवोत्पुलकिताङ्गरुहैर्विभासि ।'

'हे क्षिति अर्थात् वृन्दावन की सुन्दर भूमि !' संस्कृत में हर शब्द एक विशेष अर्थ रखता है और विशेष धातु से उसका निर्माण होता है जैसे - भू, 'भू' माने भवन्ति यस्मिन् – जिसमें प्राणी उत्पन्न होते हैं, उसको भू कहते हैं । धरणी – जो सबको धारण करती है, इसी प्रकार पृथ्वी – पृथु ने जिसका शोधन किया, उद्धार किया, वह पृथ्वी । संसार में क्षिति उसको कहते हैं, जहाँ पर प्राणियों का क्षय होता है परन्तु यहाँ एक अलग भाव है । तुम क्षिति हो अर्थात् नित्य तुम्हें श्रीकृष्ण की प्राप्ति है, जहाँ शोक का क्षय है । इस संसार में तो क्षिति वह होती है, जहाँ प्राणियों का क्षय होता है और नित्य धाम में क्षिति वह है, जहाँ नित्य विरह का शमन अर्थात् क्षय होता है । इसलिए गोपियाँ कहती हैं – किं ते कृतं क्षिति तपो – तुमने क्या तप किया है, जिसके कारण तुम्हें नित्य श्रीकृष्ण और राधिकारानी के चरणों की प्राप्ति होती है । हे सहचरि ! तुम हमें भी वह मार्ग बताओ । केशव श्रीकृष्ण के उन सुन्दर नील चरणकमलों का तुमको स्पर्श मिला है – **'केशवाङ्घ्रिस्पर्शोत्सवोत्पुलकिताङ्गरुहैर्विभासि ।'** जिस नायिका को अपने प्रियतम का स्पर्श मिलता है, वह पुलकित होती है । तुम्हें इतने रोमांच हो रहे हैं, तुम जो इतनी पुलकित हो रही हो, इससे अवश्य ही यह पता चलता है कि परम कान्त श्रीकृष्ण के चरणों का स्पर्श तुम्हें प्राप्त हुआ है । गोपियों ने 'स्पर्शोत्सव' कहा अर्थात् जिसको परम प्रियतम श्यामसुन्दर का स्पर्श मिल गया, उससे बड़ा उत्सव क्या होगा ? उन परम प्रियतम के स्पर्श से तुम्हें जो रोमांच हो रहा है, उससे तुम शोभित हो रही हो । यह तुम्हारा सहचरी रूप, यह तुम्हारा सखी रूप, प्रमाणित करता है कि तुम्हें श्रीकृष्ण के चरण मिले हैं । बिना नायक के मिलन के नायिका को रोमांच हो ही नहीं सकता है । रोमांच क्या है ? जहाँ नवीन-नवीन दिव्य लतायें, नवीन-नवीन पुष्पों के साथ, नवीन पल्लवों के साथ, नवीन कोपलों के साथ, नई शोभा, नई श्री के साथ जहाँ नित्य निकलती रहती हैं, ये है उस सहचरी का रोमांच, वृन्दावन की भूमि रूपी सहचरी का रोमांच । **'अप्यङ्घ्रिसम्भव उरुविक्रमाद् वा'** – अथवा कुछ आचार्यों ने उरुक्रम का अर्थ किया - त्रिविक्रम भगवान् का विशाल जो वपु था लेकिन अन्य आचार्यों ने कहा कि जिनकी चाल बड़ी लटकीली है,जो झूमकर चला करते हैं, निश्चय ही उन श्रीकृष्ण के चलते हुए चरणों का स्पर्श तुम्हें प्राप्त हुआ है । उससे तुम रमित हुई हो, रमण की हुई हो । **'अप्यङ्घ्रिसम्भव उरुक्रमविक्रमाद् वा आहो वराहवपुषः परिरम्भणेन'** – अथवा तुम्हारे पूर्व अवतार में वराह भगवान् ने तुम्हारे साथ रमण किया था, परिरम्भण किया था । अब उस परिरम्भण की पूर्ति कृष्णावतार में हो रही है । परम कान्त श्रीकृष्ण के मिलने से जो तुम इतनी सुन्दरी हो रही हो, छबीली बन रही हो । यह गोपियों को वृन्दावन की भूमि के सहचरी रूप का एक अनुभव था ।

बरसाने के परम रसिक सन्त वंशीअलीजी द्वारा रचित ग्रन्थ 'वृषभानुपुर शतक' में बरसाना को सहचरी रूप दिया गया है । जहाँ मस्तक पर श्री लाड़ली जी हैं, वृषभानु भवन है, इस तरह से लेटी हुई हैं । मानगढ़, दानगढ़ और मयूर कुटी तक जो शिखर है, ये उसके स्तनमण्डल हैं, गह्वरवन का राधा सरोवर उसका नाभि प्रदेश है । साँकरी खोर नितम्ब प्रदेश है । मैंने बहुत पहले यह ग्रन्थ देखा था कि बरसाना सखी का जो वर्णन है, वह सहचरी रूप में मिलता है और यही भावना भागवत से भी चली है, जिसकी चर्चा अभी हुई कि यह सहचरी है ।

किं ते कृतं क्षिति.....(श्रीभागवतजी १०/३०/१०)

हे परम चतुरा नायिका ! तुझे अवश्य श्रीकृष्ण के चरण मिले हैं, जिससे तू पुलकित हो रही है । जिनकी चाल बड़ी लटकीली है, उरुक्रम माने लटकीली चाल है । वहाँ भी सहचरी रूप का वर्णन आया है और जिस ग्रन्थ में बरसाने का वर्णन मिलता है, वहाँ भी सहचरी रूप का वर्णन आया है । बड़ा ही सुन्दर भाव है, धन्य हैं वे रसिक जिन्होंने इस धाम का सहचरी रूप देखा है । वृषभानुपुर शतक में बड़ा ही सुन्दर वर्णन है –

चलत्पदस्पर्शमवाप्य सास्थली सुनिर्वृताभूत्प्रथमं ततः परम् ।
अन्यत्र तत्पादमवेक्ष्य चेर्ष्यया किंचिन्मलिम्नश्छलतोऽश्रु बिभ्रती ॥ (श्रीवृषभानुपुरशतक – ६)

कोई नायिका जब नायक से मिलती है तब भी सात्विक भाव आते हैं । मिलन के आँसू ठण्डे होते हैं और विरह के आँसू गरम होते हैं । वंशीअलीजी लिखते हैं कि यह जो बरसाना सखी है, यह नित्य ही सरसता से भीजी हुई रहती है । इतनी सरस है कि इसके जिस स्थल में तुम जाओगे, चाहे गह्वरवन जाओ, मानगढ़ जाओ, दानगढ़ जाओ, साँकरी खोर जाओ, सभी स्थलियाँ सरसता से भीगी हुई मिलेंगी । ऐसा क्यों है ? इसलिए भीगी हुई मिलती हैं क्योंकि सात्विक भाव मिलन में भी आते हैं और विरह में भी आते हैं । इस धाम में जब राधारानी आती हैं तो उनके चरणों में नूपुर बजते रहते हैं, राधासुधानिधि के अनुसार –

पादाङ्गुली निहित दृष्टि मपत्रपिष्णुं दूरादुदीक्ष्य रसिकेन्द्र मुखेन्दुबिम्बम् ।
वीक्षे चलत्पदगतिं चरिताभिरामां झङ्कार नूपुरवतीं बत कर्हि राधाम् ॥ (श्रीराधासुधानिधि – १५)

यह बड़ा ही विचित्र श्लोक है । कहना चाहिए नूपुर झङ्कारवतीं – नूपुर की झनकार वाली, षष्ठी समास करना चाहिए – 'नूपुरस्य झङ्कारः' लेकिन श्लोक में 'झङ्कार' पहले कहा कि उनके नूपुर ऐसे बजते हैं कि उनकी झनकार सारे वृन्दावन में सुनायी देती है । इसलिए इस श्लोक में 'झङ्कार' शब्द को प्रधानता दी गयी है । अभिधेय को ग्रन्थकार ने पहले रखा है । ऐसा समझिये कि यदि षष्ठी समास होता तत्पुरुष तो तत्पुरुष में उत्तर पद प्रधान होता है किन्तु यहाँ कर्मधारय है तो इसमें उभय पद प्रधान होता है, अतः 'झङ्कार नूपुर' में झनकार की अधिक प्रधानता है । जब श्रीजी वृन्दावन में चलती हैं तो सारा वृन्दावन झंकृत होता है । जब श्रीकृष्ण की वंशी बजती है तो उसका जो अद्भुत चमत्कार है, अद्भुत जादू सारे वृन्दावन में छा जाता है । उस समय हंस, सारस, शुक, पिक आदि सभी पक्षी मौन होकर वंशी की ध्वनि सुनते हैं ।

सरसि सारसहंसविहङ्गाश्चारुगीतहृतचेतस एत्य ।
हरिमुपासत ते यतचित्ता हन्त मीलितदृशो धृतमौनाः ॥ (श्रीभागवतजी १०/३५/११)

ऐसी श्रीकृष्ण की जब वंशी बजती है तो ऐसा चमत्कार होता है ।

दर्शनीयतिलको वनमाला दिव्यगन्धतुलसीमधुमत्तैः ।
अलिकुलैरलघुगीतमभीष्टमाद्रियन् यर्हि सन्धितवेणुः ॥ (श्रीभागवतजी १०/३५/१०)

ऐसी वंशी बजती है, वंशी बजाने वाला ऐसा चतुर है कि संसार में ऐसा कौन होगा कि जब देखा कि कोयल बोल रही है तो कोयल के स्वर में वंशी बजा देता है, जब देखता है कि तोता बोल रहा है तो तोते के स्वर से वंशी बजाकर दिखा देता है । यह भागवत का श्लोक है – **'अलिकुलैरलघुगीतम्'** – अलिकुल का मतलब है कि भौंरे जिस खरज पर अपनी पिच स्थापित कर रहे थे । जो लोग संगीत जानते हैं, वे समझ सकते हैं कि पहले खरज स्थापित किया जाता है, उसके बाद फिर सातों स्वरों का और बाईस श्रुतियों का विस्तार होता है । पहले खरज की स्थापना होती है अर्थात् वह राग और स्वर के विस्तार का आधार बनता है । श्रीकृष्ण ने देखा कि उनकी वनमाला के पास भौंरे गुनगुना रहे थे । श्यामसुन्दर आ रहे हैं, निकट ही ब्रज का बहुत ही अद्भुत सरोवर है । यही समझ लीजिये कि गह्वर वन का राधा सरोवर है । श्यामसुन्दर सजे-सजाये हुए आ रहे थे – **दर्शनीयतिलको वनमाला'** – मस्तक पर सुन्दर तिलक लगा है, गले में वनमाला है । **'दिव्यगन्धतुलसी'** – तुलसी की दिव्य गन्ध की माला है । उस पर झूमते हुए भौंरे चले आ रहे हैं । वे भौंरे श्रीकृष्ण की

वह परमात्मा 'रस' ही है और उस रस को प्राप्त करके ही यह जीव आनन्दित होता है ।

अंग सुगन्ध लेते हुए, दिव्य तुलसी माला और वनमाला की सुगन्ध का पानकर मतवाले हो गये, पागल हो गये । पागल कैसे हो गये ? **'अलिकुलैः अलघुगीतम्'** – जैसा उनको गाना था, लघु कहते हैं संक्षिप्त स्वर को । भौंरों का छोटा स्वर होता है, कोयल का पञ्चम स्वर होता है, जो बहुत ऊँचा होता है । कोयल की आवाज जितनी दूर जायेगी, उतनी दूर भँवरे की आवाज नहीं जायेगी । यहाँ पर भौंरों का जो लघु स्वर था, वह कृष्ण के अंग की सुगन्ध के सुन्दर आस्वाद से अलघु बन गया । वह कोकिला के स्वर को भी पार कर गया । श्रीकृष्ण की वंशी का ऐसा अद्भुत चमत्कार है । इसीलिए इस श्लोक में कहा गया – **'अलिकुलैः अलघु गीतम'** – भौंरे अलघु गीत गाने लगे जबकि वे तो लघु गीत गाते थे, उनका स्वर लघु होता है लेकिन आज भौंरों ने श्रीकृष्ण की अंग सुगन्ध का आस्वादन किया तो वे अलघु गीत गाने लगे, वे मतवाले हो गये, पागल हो गये और उन्माद में उनका ऐसा स्वर निकला, उन्होंने ऐसा गाया कि श्रीकृष्ण भी हँसने लगे । वे बोले – 'अच्छा, आज तो तुम ऐसा गाने लगे । तुमने उच्च पञ्चम स्वर वाली कोकिलाओं को भी पीछे छोड़ दिया ।' श्रीकृष्ण ने भँवरों का सम्मान किया । **'अलि कुलैः अलघु गीतमभीष्टमाद्रियन्'** – आद्रियन् अर्थात् श्रीकृष्ण ने उनका सम्मान किया क्योंकि यह प्रेम की मस्ती थी, प्रेम की मादकता थी । यह उस धाम का अद्भुत सौष्ठव है, उस धाम का वैशिष्ट्य है, जहाँ भौंरों का संगीत कोकिला के स्वर से भी अधिक आगे बढ़ रहा है, उसका श्यामसुन्दर ने स्वागत किया ।

'अलिकुलैरलघुगीतमभीष्टमाद्रियन् यर्हि सन्धित वेणुः' – अभीष्टम माने बड़े प्रसन्न हुए कि भँवरे इतना अच्छा गाते हैं । 'आद्रियन् यर्हि सन्धित वेणुः' – बस, श्यामसुन्दर ने भौंरों के स्वर में अपनी वंशी की तान को मिला दिया । यह कितना बड़ा सम्मान है । जब वंशी का स्वर और भौंरों का स्वर एक हो गया तो यह एक अद्भुत विचित्रता थी । वंशी और भौंरों का स्वर एक होने के बाद समस्त वृन्दावन के पक्षी दौड़ पड़े ।

सरसि सारसहंसविहङ्गाश्चारुगीतहृतचेतस एत्य । हरिमुपासत ते यतचित्ता हन्त मीलितदृशो धृतमौनाः ॥

ये वृन्दावन के पक्षी कृष्ण के पास आकर उनकी उपासना करने लगे । उपासना कैसे कर रहे हैं, क्या माला जप रहे हैं ? नहीं-नहीं, उपासना का मतलब माला जपना नहीं होता है । उपासना होती है मन के द्वारा, मन को प्रभु के पास बैठाया जाए । जब मन अपने इष्ट के पास पहुँच गया, वह है सच्ची उपासना, उसको उपासना कहते हैं । मन तो हमारा भगवान् के पास कभी बैठा ही नहीं तो हमारा साधन केवल एक बाह्य क्रिया है । **'हरिमुपासत ते यतचित्ता'** – वृन्दावन के पक्षी हरि की उपासना करते हैं । कैसे करते हैं ? उनका चित्त संयमित है, श्यामसुन्दर के पास है, धृतमौनाः – सब पक्षी चुप हो गये हैं । यह उपासना हो रही है । यही श्रीकृष्ण की वंशी का चमत्कार है । किन्तु वे श्यामसुन्दर राधारानी से कहते हैं – आपके नूपुरों का विलक्षण चमत्कार है ।

'तेरे नूपुर धुनि प्यारी, अचल चले चल रहे री रहित गति ।'

अचल लतायें-वृक्ष चल रहे हैं, पुलकित हो रहे हैं, उनसे मधु स्त्राव हो रहा है और चल पक्षी आदि गतिहीन हो गये हैं, इनमें स्पन्द भी नहीं रहा, सारे वृन्दावन में लोम-विलोम भाव हो गया ।

'खग मृग व्रत मानो धरयो है मुनि ।'

श्रीराधारानी के नूपुरों की ध्वनि को सुनने के लिए श्यामसुन्दर ने अपने ही करकमल से शैय्या बनायी थी ।

राधारानी के नूपुरों से ही अनन्त प्रेम जन्य मन्त्रों की उत्पत्ति हुई है ।

'अनेकमन्त्रनादमंजु-नूपुरारवस्खलत्'

हे राधे ! जब आप चलती हैं तो आपके नूपुरों से अनेक वेद मन्त्रों की सुमधुर झनकार उत्पन्न होती है ।

यह बात केवल कृपा कटाक्ष में ही नहीं कही गयी है, जितना भी मन्त्र शास्त्र है, यहाँ तक कि शब्द ब्रह्म तक की उत्पत्ति राधारानी के नूपुरों से हुई है । महावाणीकार लिखते हैं –

श्रीराधा पद कमल ते नूपुर कलरव होय । निर्विकार व्यापक भयो शब्द ब्रह्म कहि सोय ॥

हमारी जितने अंश में सच्चे संत (श्रीगुरुदेव) में शरणागति (भक्ति) होगी, उतने ही अंश में श्रीभगवान् में होगी; ये श्रीइष्ट में समर्पण का सबसे बड़ा पैमाना (मापदण्ड) है ।

राधापदकमल का श्रीवन पर प्रभाव

बाबाश्री द्वारा कथित श्रीराधासुधानिधि-सत्संग (२९/८/२०००) से संकलित

'शब्द' ब्रह्म की उत्पत्ति राधारानी के नूपुरों से हुई है ।

अनेकमन्त्रनादमंजु-नूपुरारवस्खलत्, समाजराजहंसवंश-निक्वणातिगौरवे ।

जैसे हंस बहुत मीठे स्वर से बोलता है, उसी प्रकार ऐसा लगता है कि राधारानी के नूपुर की ध्वनि राजहंसों की गुंजार है । हंस की बोली को क्वणन कहते हैं, ऐसा लगता है कि राधारानी के चरण तो कमल हैं । कमल में भँवरे होते हैं । जो नूपुर हैं, ये ही भँवरे हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि राधारानी के चरणकमल में अनेक भँवरे लिपट गये हैं ।

श्रीराधिके सुरतरङ्गि-नितम्बभागे काञ्चीकलाप-कलहंस-कलानुलापैः ।
मञ्जीर-शिञ्जित-मधुव्रत-गुञ्जितांघ्रि-पङ्केरुहैः शिशिरय स्वरसच्छटाभिः ॥ (श्रीराधासुधानिधि -१९)

हे राधे ! नितम्ब प्रदेश में आपकी कौंधनी की झनकार ही हंसों का क्वणन है । आपके चरण कमल में सैकड़ों भँवरे गुंजार कर रहे हैं । वे मंजीर, वे नूपुर ही तो भँवरे हैं, जो उस चरण कमल को पाकर झन-झन-झन गुंजार कर रहे हैं । वे चरणकमल, जिसमें नूपुरों की भँवरावली गुंजार करती है, वे आप मुझे दिखाओ ।

इसीलिए श्रीजी के नूपुरों को चाहे भँवरे कह लो, चाहे राजहंस कह लो, नूपुरों की जो ध्वनि है –

समाजराजहंसवंश-निक्वणातिगौरवे, विलोलहेमवल्लरी विडम्बिचारुचंक्रमे ।

हे राधे ! आप जब चलती हैं तो ऐसा लगता है कि सुनहली चम्पा चली जा रही है, सोने की लता जा रही है, चमकती हुई बिजली जा रही है । क्या भाषा है, क्या भाव है ? साक्षात् सुनहली लता चलती जा रही है । दामिनी की गति है, जिसमें नूपुरों की झनकार है । **'कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्'** हे राधे ! आप मुझ पर कब कृपा करेंगी ?

उस वन में, जहाँ राधारानी विचरण कर रही हैं, वह वन सहचरी रूप है, यह चर्चा चल रही थी और जो भाव श्रीमद्भागवत में है, वही भाव रसिकों ने भी लिखा है कि यह बरसाना भी सहचरीरूपा है ।

चलत्पदस्पर्शमवाप्य सास्थली सुनिर्वृताभूत्प्रथमं ततः परम् ।
अन्यत्र तत्पादमवेक्ष्य चेर्ष्यया किंचिन्मलिम्नश्छलतोऽश्रु बिभ्रती ॥

किशोरीजी आ रही हैं । जहाँ उनके चरण पड़ते हैं, उस स्थली को तो राधारानी के चरणों का मिलन प्राप्त हो गया । आँसू, स्वेद आदि जितने भी सात्विक भाव हैं, ये मिलन में भी होते हैं और विरह में भी होते हैं । मिलन के आँसू ठण्डे होते हैं, मिलन का स्वेद भी ठण्डा होता है । यह एक बड़ी विचित्र बात है । विरह के आँसू और स्वेद गरम होते हैं । अतः जहाँ श्रीराधारानी के चरण पड़ रहे हैं, उस स्थली को मिलन प्राप्त हुआ और वह आनन्द से भर गयी । उसके भीतर जो प्रेम के आँसू आये, वे शीतल थे । शीतल आँसुओं पर राधारानी के चरण पड़ रहे हैं, यह भाव है । ऐसा भाव श्रीमद्भागवत में भी आता है । हम यह इसलिए बता रहे हैं कि भाव परम्परा एक ही है । किसी भी सम्प्रदाय का रसिक अनुभव करेगा, चाहे भागवत से अनुभव करेगा, चाहे वह गौड़ीय ग्रन्थों और गोस्वामियों से अनुभव करेगा, चाहे वह निम्बार्क सम्प्रदाय की महावाणी से अनुभव करेगा, चाहे वह हित चतुरासी से अनुभव करेगा, चाहे केलिमाल से अनुभव करेगा, भावानुभूति एक है । इसलिए मैं सर्वत्र से बता देता हूँ ताकि हमारे लोगों में जो भेद बुद्धि है, इसका विनाश हो जाए और भावोत्पत्ति हो जाए । भावोत्पत्ति विषमता में नहीं होती है । याद रखिये, भाव सदा समता में ही उत्पन्न होता है । इसलिए हम भागवत से भी प्रमाण बता रहे हैं । इसे गोपियों ने कहा है । एक बड़ा सुन्दर भाव है । जो गिरिराजजी हैं, सख्य रस में सखाओं के बीच में इनका सखा रूप है और सहचरियों के बीच में सहचरी रूप है । गोपियाँ कहती हैं –

हन्तायमद्रिरबला हरिदासवर्यो यद् रामकृष्णचरणस्पर्शप्रमोदः ।
मानं तनोति सहगोगणयोस्तयोर्यत् पानीयसूयवसकन्दरकन्दमूलैः ॥ (श्रीभागवतजी १०/२१/१८)

जो भक्त मेरे लिए अपना घर, धन, पशु तथा अन्य सभी वस्तुओं को छोड़ देते हैं, उन्हें मैं मृत्युरूप संसार सागर से पार कर देता हूँ ।

ये हरिदासवर्य (हरिदासों में श्रेष्ठ) गिरिराज कितनी सेवा करते हैं । इस श्लोक का बड़ा ही सुन्दर भाव आचार्यों ने लिखा है । वे लिखते हैं कि अद्रि का अर्थ क्या होता है ? 'न दीर्यते अद्रिः' – जिसका विदारण नहीं होता है । पहाड़ कभी फटता नहीं है । चाहे उसके ऊपर कितना भी पानी गिरे, पत्थर गिरे, बिजली गिरे, 'न विदीर्यते' – उसका विदीरण नहीं होता है । यह गिरिराज तो अद्रि था लेकिन अद्रि होने के बाद भी इसका विदीरण हो गया, कैसे हो गया ? यह पिघल गया । कैसे पिघल गया ? यद् रामकृष्णचरणस्पर्शप्रमोदः – इसके कई भाव बताये गये हैं, जैसे जब इसके ऊपर दोनों भाई कृष्ण-बलराम के चरण पड़े तो यह प्रमोद (आनन्द) से भर गया और इसके बाद इसकी भावनाओं का जो प्रस्फुटन हुआ, वह झरनों के रूप में हुआ, फलों के रूप में हुआ, अमृतमयी सुन्दर घास के रूप में हुआ तथा उस आनन्द के अतिरेक में यह सेवा कर रहा है, कैसे ? 'पानीयसूयवसकन्दरकन्दमूलैः' – इसके हृदय में जो प्रमोद आया तो देखो, इस आमोद के कारण गिरिराज में झरने बह रहे हैं, सुन्दर अमृतमयी घासें तथा सुन्दर रत्नमयी कोमल कन्दराएँ एवं कन्द-मूल फल आदि इसने सेवा के लिए प्रस्तुत किये । 'रामकृष्णचरणस्पर्शप्रमोदः' का भाव आचार्यों ने लिखा है – रामकृष्णचरणयोः प्रमोदः । षष्ठी दो वचन में भी 'चरणयोः' बनता है और सप्तमी में भी 'चरणयोः' बनता है । राम-कृष्ण के चरणों का आनन्द और राम-कृष्ण के चरणों में आनन्द – ये दोनों भाव समझिये । इसमें थोड़ा अन्तर है । आचार्य लिखते हैं कि कृष्ण के चरणों का आनन्द इसको मिला । कृष्ण के सुन्दर-सुन्दर चरण हैं, उनके स्पर्श का आनन्द गिरिराज को मिला । यह तो हुआ षष्ठी का अर्थ और सप्तमी का अर्थ हुआ कि जब गिरिराज को आनन्द मिल गया तो ये पिघल गये, चिकने हो गये, रस से सिक्त हो गये । उस चिकनी और रसीली भूमि पर श्रीकृष्ण के चरण पड़ते हैं, इसलिए उनके चरणों को भी आनन्द मिलता है । अतः राम-कृष्ण के चरणों में भी आनन्द मिला । चरणों का आनन्द और चरणों में आनन्द । इस तरह आचार्यों ने दोनों भाव बताये । एक दार्शनिक सिद्धान्त है कि श्रीकृष्ण भक्तों के वश में क्यों होते हैं ? भक्त है तो उसके वश में क्यों हो गये ? रसिकों ने कहा कि भगवान् राधारानी के अतिरिक्त और किसी के वश में नहीं होते हैं । फिर भी भक्त चरित्र सुनने से पता पड़ता है कि अनेक भक्तों के वश में वे होते आये हैं । इसका उत्तर यही है कि ये जो राधिकारानी हैं, ये ही हैं उस प्रेम का समष्टि तत्त्व ह्लादिनी, जहाँ से ह्लाद निकलता है । इनके कारण ही ब्रह्म को आनन्द की प्राप्ति होती है । राधारानी कौन हैं ? राधारानी के बारे में कहा गया है –

महाप्रेमोन्मीलन्नवरससुधासिन्धुलहरी-परीवाहैर्विश्वं स्नपयदिव नेत्रान्तनटनैः ।
तडिन्मालागौरं किमपि नवकैशोरमधुरं पुरन्ध्रीणां चूडाभरणनवरत्नं विजयते ॥ (श्रीराधासुधानिधि – ५०)

प्रेमदेवी उन राधारानी की विजय हो, जिन्होंने श्रीकृष्ण को भी अपने वश में कर लिया, विजय कर लिया । वे कैसी हैं ? साक्षात् जो दिव्य प्रेम है, जिसके आधीन श्रीकृष्ण होते हैं, जिनके नेत्रों की कोरों से चारों ओर उस प्रेम की वर्षा होती है, जो भी प्रेम कहीं भी है, उस सब प्रेम का अंगी राधारानी हैं ।

श्रीजीव गोस्वामीजी ने लिखा है कि जैसे परम वाहन सबसे बड़ा होता है, परम वाहन प्रेम का स्वरूप है । समझाने के लिए उन्होंने उदाहरण दिया कि महान, फिर परम महान । उसी प्रकार सुधानिधि के अनुसार महाप्रेमोन्मीलन – महान प्रेम को खिलाने वाला जो रस है- महाप्रेमोन्मीलन्नवरससुधासिन्धु – उस रस का भी अमृत यानी सार । प्रेम का सार रस और रस का भी जो सार होता है, जिससे आगे कुछ नहीं होता है । यह प्रसंग आया है, जब चैतन्य महाप्रभुजी से राय रामानन्दजी ने प्रेम विवर्त की बात कही थी, उस समय महाप्रभु ने राय रामानन्दजी के मुँह पर हाथ रख दिया और कहा कि अब चुप रहो, इससे आगे और कुछ नहीं होता है । यह विवर्त अद्वैतवादियों का विवर्त नहीं है । विवर्त के बहुत से अर्थ होते हैं । विवर्त का एक अर्थ विपरीत होता है, विपरीत वर्त । विवर्त का अर्थ होता है विशेष वर्त अर्थात् पाक तथा विवर्त होता है अद्वैतवादियों का विगत वर्त – भ्रम, जिसके अनुसार सारा संसार विवर्त है । यहाँ उस विवर्त से प्रयोजन नहीं है । जिसकी अतात्त्विक प्रवृत्ति होती है, अद्वैत ग्रन्थों में अतात्त्विक प्रतीति को विवर्त कहा गया है । वैष्णव सम्प्रदायों

कर्मेन्द्रियाँ अपने आप श्रीकृष्ण में लगें, मन भी अपने आप श्रीकृष्ण में लगे, उसका नाम भक्ति है यानी लगाना न पड़े

में चैतन्य महाप्रभुजी ने कहा कि अतात्त्विक प्रतीति तो हो ही नहीं सकती, जो तत्त्व नहीं है, उसकी प्रतीति कहाँ हो सकती है ? विवर्त की तात्त्विक प्रतीति होती है और वह तात्त्विक प्रतीति प्रेम का परिपाक है, वही है राधारानी का प्रेम । इसलिए

महाप्रेमोन्मीलन्नवरससुधासिन्धुलहरी-परीवाहैर्विश्वं स्नपयदिव नेत्रान्तनटनैः ।

जिनके नेत्रों से चारों ओर प्रेम की वर्षा होती है, इसलिए जहाँ भी प्रेम है चाहे वह सख्य का है, चाहे दास्य का है, चाहे वात्सल्य का है, उस सबका मूल राधिकारानी का आह्लाद है । यह स्वरूप शक्ति आह्लादिनी भक्त के हृदय में जाकर बैठती है, नहीं तो इस शरीर में है क्या ? अरे, इस मल-मूत्र के पिण्ड को कितना सजाओगे ? चाहे कितना भी क्रीम-पाउडर लगाओ, यह है तो विकारमय पुंज, इस पर तो कोई विवेकी भी मोहित नहीं होगा, फिर भगवान् कैसे मोहित हो जाएगा ? जब हृदय में आह्लादिनी की किरण आती है, तब भगवान् वश में होता है, अन्यथा नहीं हो सकता है । इसीलिए सब कुछ श्रीजी के प्रेम का विकास है, यह वन भी उन्हीं के प्रेम का विकास है । इसको दार्शनिकों ने दूसरे ढंग से कहा है, दार्शनिक पक्ष भी हम रख रहे हैं, यद्यपि वह थोड़ा नीरस लगता है । कृष्ण का नाम है 'आत्माराम' । 'आत्माराम' माने क्या होता है ? 'आत्मनि रमते यः स आत्मारामः' - जो केवल आत्मा में ही रमण करता है । इसको ऐसे समझ लो जैसे हम लोग लड्डुआराम हैं, लड्डू मिल जाएगा तो उसमें रमण करेंगे, छाती अड़ा देंगे । टकाराम, रुपयाराम, पैसा राम – यह हम लोगों का स्वरूप है या इन्द्रियाराम – जो इन्द्रियों में रमण करता है । भगवान् ने गीता में कहा कि ऐसा नहीं बनना चाहिए ।

एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः । अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति ॥ (श्रीगीताजी ३/१६)

भगवान् ने कहा कि इन्द्रियारामी लोगों का जीवन बेकार होता है, ये बेकार में जीते हैं । लड्डू-पेड़ा-जलेबी-खीर के लिए जीते हैं तथा अन्य भी इन्द्रियों के विषय शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध के आनन्द के लिए जीते हैं । कामी कामिनी के लिए जीता है । भगवान् बोले – अरे इन्द्रियारामो ! तुम्हारा तो जीवन ही बेकार चला गया । इन्द्रियारामी की सारी आयु पापमय है । सबेरे से उठेगा तो सोचेगा कि आज पकौड़ी बननी चाहिए, केवल चाय कैसे पी जाएगी, उसके साथ पकौड़ी भी चाहिए, पकौड़ी के साथ चटनी भी चाहिए । कहता है कि पकौड़ी और चटनी का मेल है । भगवान् कहते हैं कि अरे, कुछ नहीं, तुम तो इन्द्रियारामी हो, तुम्हारा जीवन तो मिट्टी में चला गया, बेकार हो गया । तुम्हारा सारा जीवन इसी में जायेगा । चटनी ही घोटते रहोगे । आत्माराम कौन है ? जो इन्द्रियाराम नहीं है, विषयाराम नहीं है, शब्दाराम नहीं है, स्पर्शाराम नहीं है, वह आत्माराम है । भगवान् आत्माराम हैं, वे आत्मा में रमण करते हैं, बाहर नहीं रमण करते हैं । इसीलिए कहा गया – **'आत्मा तु राधिका तस्य'** – आत्मा का मतलब कृष्ण में अलग आत्मा, देह-देही विभाग नहीं है, जैसे हम लोगों में होता है शरीर अलग, आत्मा अलग । कृष्ण के बारे में तो ऐसा सोचना भी अपराध है । वह तो महामूर्ख है जो भगवान् में देह-देही विभाग करता है (उनका शरीर अलग है, आत्मा अलग है) । रामायण में भगवान् के बारे में कहा गया है – **'चिदानन्दमय देह तुम्हारी । विगत विकार जान अधिकारी ॥'** भगवान् की देह चिदानन्दमय है । भागवत में ब्रह्माजी ने भी कृष्ण के बारे में कहा है – **'अस्यापि देव वपुषो मदनुग्रहस्य स्वेच्छामयस्य न तु भूतमयस्य कोऽपि ।'** भगवान् का शरीर पाञ्चभौतिक नहीं है, स्वेच्छामय है । **'निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार ।'** भगवान् के शरीर में देह-देही विभाग सोचने वाला अपराधी है । स्कन्दपुराण के भागवतमाहात्म्य में कहा गया है –

आत्मा तु राधिका तस्य तयैव रमणादसौ ।
आत्मारामतया प्राज्ञैः प्रोच्यते गूढवेदिभिः ॥ (श्रीभागवत-माहात्म्य १/२२)

भगवान् श्रीकृष्ण की आत्मा हैं – राधिका, उनसे रमण करने के कारण ही रहस्य रस के मर्मज्ञ ज्ञानी पुरुष उन्हें आत्माराम कहते हैं । वे आत्माराम हैं और आत्माराम होने पर भी रमण कर रहे हैं, क्यों ? भक्तिशास्त्र में कहा गया है कि ब्रह्मानन्द को सबसे ऊँची संख्या से गुणा कर दो, अब मान लो सबसे ऊँची संख्या से गुणा करने पर अनन्त आया । अब उसकी तुलना भक्ति रूपी अमृत की एक बूँद से कर दो तो वह उस बूँद के एक परमाणु से भी समता नहीं कर सकता

मृत्यु से भय नहीं करना चाहिए, भय इस बात का होना चाहिए कि कभी भगवान् की विस्मृति न हो

है । इसलिए आत्माराम होकर भी श्रीकृष्ण जो रमण कर रहे हैं, ये दिखा रहे हैं कि उस आत्मारामता से ये साक्षात् लीला बहुत आगे की चीज है । अतएव कहा गया – **रेमे तया चात्मरत आत्मारामोऽप्यखण्डितः ।**

कामिनां दर्शयन् दैन्यं स्त्रीणां चैव दुरात्मताम् ॥ (श्रीभागवतजी १०/३०/३५)

जब राधारानी मान करती हैं तो मान क्या है ? जो रस की उदारता है, उस उदारता में जब शिथिलता आ जाती है तो उसे मान कहा गया है । यह प्रणय (प्रेम युक्त) मान है, कोप (क्रोध-कलह) मान नहीं है । ऐसा क्यों होता है ? रस की वृद्धि के लिए ऐसा किया जाता है । इसलिए दुरात्मता का अर्थ हुआ कि वह जो मान है, उसको श्रीजी दिखा रही हैं, उनकी यहाँ मान लीला चल रही है और 'गीत गोविन्द' के अनुसार श्रीकृष्ण श्रीजी के चरणों में गिरकर कहते हैं –

'स्मर गरल खण्डनम्' हे राधे ! आप अपने चरणों को मेरे मस्तक पर रखिये । ये है दैन्य, जिसे श्रीकृष्ण दिखा रहे हैं । श्रीकृष्ण कहते हैं कि आपके द्वारा चरणों के रखने से मेरा विरह रूपी विष नष्ट हो जायेगा । श्रीजी ने श्यामसुन्दर से कहा कि मेरा चरण तुम अपने मस्तक पर रखोगे तो क्या तुम्हारे मोरमुकुट की शोभा नष्ट नहीं होगी ? तब श्यामसुन्दर बोले – **'मम शिरसि मण्डनम्'** हे राधे ! मेरे मस्तक का मुकुट मोरपंख नहीं है, मेरे मस्तक का मण्डन अर्थात् शोभा तो आपके चरण हैं । आप संकोच मत करो । आपके चरण पल्लव से भी अधिक कोमल हैं । पल्लव के स्पर्श से आनन्द मिलता है । आपके चरण कोमल हैं, बड़े उदार हैं, उन्हें आप हमारे मस्तक पर रख दो । **'देहि पद पल्लवमुदारम्'** विरही फूलों की शय्या पर सोता है, पल्लवों का स्पर्श करता है । उसके शरीर पर पल्लवों के पंखे किये जाते हैं । हे किशोरीजी ! आपके चरण पल्लव मेरी उस विरह ज्वाला को बुझा देंगे, जो मुझे जला रही है ।

आपका नाम राधा है, राधा माने बाधा हरणी । जो बाधा हरती हैं, वे हैं राधा । ये राधा शब्द की व्युत्पत्ति है, राध् संसिद्धौ धातु, राधनोति सकलान् कामान् तस्मात् राधेति प्रकीर्तितः । देवी भागवत में ऐसा कहा गया है, जो समस्त बाधाओं को नष्ट कर देती हैं । अतः आप मेरी बाधाओं को नष्ट करो ।

'हरतु तदुपाहित विकारं प्रिये चारुशीले' यह 'चारुशीले' शब्द श्रीजी के लिए कहा गया है ।

सीताजी की सहचरियों का जहाँ वर्णन आता है, वहाँ हनुमानजी का भी एक सखी रूप है । वहाँ उनका नाम 'चारुशीला' सखी है । इस तरह यह वनविहार का प्रसंग चल रहा है । 'वन' राधारानी का स्वरूप है । क्यों ? यदि वन को राधारानी से भिन्न मानोगे तो कृष्ण की आत्मारामता में एक शंका उत्पन्न हो जाएगी । 'कृष्ण' आत्मा के अतिरिक्त और कहीं रमण नहीं करते हैं । इसीलिए मत्स्य पुराण में कहा गया है – **राधा वृन्दावने वने ।**

मान मंदिर लीला स्थल श्रीराधाकृष्ण की लीला स्थलियों में सबसे प्रमुख है
इस अति विलक्षण लीला स्थली के पुरुद्धार कार्य में जुड़ कर धाम सेवा का दुर्लभ लाभ प्राप्त करें
सेवा राशि देकर रसीद अवश्य प्राप्त करें।

ACCOUNT NUMBER: **59109927338666**
IFSC CODE: **HDFC0000268**
BANK: **HDFC BANK LTD**
BRANCH: **BSA COLLEGE, MATHURA**
संपर्क :9927338666
www.maanmandir.org
आपकी सेवा राशि आयकर अधिनियम 80G/12A के अंतर्गत आयकर छूट के लिए मान्य है
रजिस्ट्रेशन नंबर AADTS716DEF2021401

'राधा' नाम से 'रस' प्राप्ति सहज

बाबाश्री के श्रीराधासुधानिधि-सत्संग (७/५/१९९८) से संकलित

भागवत में भगवान् ने उद्धवजी से कहा है – **यथाग्निः सुसमृद्धार्चिः करोत्येधांसि भस्मसात् ।**
तथा मद्विषया भक्तिरुद्धवैनांसि कृत्स्नशः ॥ (श्रीभागवतजी ११/१४/१९)

हे उद्धव ! जैसे धधकती हुई आग लकड़ियों के बड़े ढेर को भी जलाकर ख़ाक कर देती है, वैसे ही मेरी भक्ति भी सारे पापों को पूरी तरह जला डालती है । अब ये सभी वाक्य श्रीराधारानी के बारे में नहीं आये हैं । राधिकारानी के विषय में पाप कैसे नष्ट होंगे, इसके बारे में बाद में बताया जायेगा । पहले तो यह समझ लो कि श्रीकृष्ण के स्मरण से संचित पाप नष्ट हो जाते हैं और प्रारब्ध भी जल जाता है । जैसा कि भागवत के तीसरे स्कन्ध में कहा गया है –

यन्नामधेयश्रवणानुकीर्तनाद् यत्प्रह्वणाद्यत्स्मरणादपि क्वचित् ।
श्वादोऽपि सद्यः सवनाय कल्पते कुतः पुनस्ते भगवन्नु दर्शनात् ॥ (श्रीभागवतजी ३/३३/६)

यह प्रारब्ध नाश का प्रमाण है । जिन श्रीकृष्ण के नाम के श्रवण और कीर्तन से चाण्डाल भी यज्ञ करने के योग्य हो जाता है । **'श्वपचहू श्रेष्ठ होत पद सेवत, बिनु गोपाल द्विज जनम न भावै ।'** वह ब्राह्मण बेकार है, जिसमें भक्ति नहीं है । जिसमें भगवान् की भक्ति है, ऐसा चाण्डाल ब्राह्मण से श्रेष्ठ है । इस तरह प्रारब्ध का भी नाश हो गया । पाप के दो भेद प्रारब्ध और अप्रारब्ध के नाश होने का प्रमाण दिया गया । पाप की माँ है वासना, उसे बीज कहते हैं । वासना के नाश का प्रमाण है – **तैस्तान्यघानि पूयन्ते तपोदानजपादिभिः । नाधर्मजं तद्धृदयं तदपीशाङ्घ्रिसेवया ॥** (श्रीभागवतजी ६/२/१७) 'वासना' – हृदय की शुद्धि भी श्रीकृष्ण-स्मरण से होती है अर्थात् बीज भी जलता है और माँ की माँ, चोर की नानी अविद्या, वह भी श्रीकृष्ण के स्मरण से नष्ट हो जाती है ।

यत्पादपङ्कजपलाशविलासभक्त्या कर्माशयं ग्रथितमुद्ग्रथयन्ति सन्तः ।
तद्वन्न रिक्तमतयो यतयोऽपि रुद्धस्रोतोगणास्तमरणं भज वासुदेवम् ॥ (श्रीभागवतजी ४/२२/३९)

जिन भगवान् कृष्ण के चरण में जो कमल के दल की तरह अंगुलियाँ हैं, उनमें भक्ति आ जाने से कर्म की ग्रन्थियाँ जिस प्रकार नष्ट हो जाती हैं, वैसा योगी लोग भी लाखों वर्ष तक समाधि लगाने पर नहीं कर पाते हैं । उनकी अविद्या की गाँठ वैसी नहीं खुलती है जैसी भगवान् श्रीकृष्ण के स्मरण से खुलती है ।

इस तरह यह बताया गया कि पाप नाश श्रीकृष्ण स्मरण से होता है । पाप का नाश करना, असुरों का संहार करना – ये सब तो महारानी का काम नहीं है । उनका तो काम एकमात्र प्रेम-रस का दान करना है । श्रीकृष्ण-स्मरण से भी अधिक राधारानी के स्मरण से पाप बहुत जल्दी नष्ट हो जाते हैं । उसकी शैली या उसका ढंग या उसकी प्रक्रिया सुनिए ।

अनुल्लिख्यानन्तानपि सदपराधान् मधुपतिर्-महाप्रेमाविष्टस्तव परमदेयं विमृशति ।
तवैकं श्रीराधे गृणत इह नामामृतरसं महिम्नः कः सीमां स्पृशति तव दास्यैकमनसाम् ॥ (राधासुधानिधि - १५४)

इस श्लोक का अर्थ समझने से पहले एक उदाहरण समझिये । किसी राजा का एक लड़का खो गया था । राजा ने कहा कि कोई मेरे लड़के को ढूँढकर लाये । राजा एक बार जंगल में शिकार खेलने गया और भूल गया । राजा ने कहा कि जो भी मेरे लड़के को ढूँढकर लाएगा, मैं उसको बहुत बड़ा इनाम दूँगा । राजा का बड़ा ही प्यारा पुत्र था । एक आदमी था, उस पर बहुत से इल्जाम थे । उसने बहुत से पाप किये थे । वह हिम्मती था, वह गया और राजा के पुत्र को ढूँढकर ले आया और उसे राजा के सामने प्रस्तुत करके पूछा – 'महाराज ! देखिये, क्या यह आपका पुत्र है ?' राजा ने कहा – 'हाँ, यह तो मेरा पुत्र है । अरे, इस आदमी को इनाम दो ।' किसी ने कहा – 'महाराज ! यह तो बहुत बड़ा डाकू है । इसने बहुत सी हत्यायें की हैं ।' राजा बोला – 'कुछ नहीं, इसको इनाम दो । मैं कहता हूँ, इसको इनाम दो ।' राजा भूल जाता है कि इस आदमी ने कितनी हत्यायें की हैं, यह कितना कुख्यात डाकू है, क्यों भूल जाता है, प्रीति के कारण । उसे अपने पुत्र से

बड़ी प्रीति थी । इस उदाहरण से इस श्लोक का अर्थ समझा जा सकता है । यही भाव रसिकों ने दिया है कि कोई महापापी जा रहा था । उसके इतने अधिक पाप थे कि लिखे नहीं जा सकते थे । अनुल्लिख्यान् माने लिखे नहीं जा सकते । कैसे पाप किये ? चोरी-छिनारी आदि तो छोटे पाप हैं । पाप भी बहुत प्रकार के होते हैं । अभी आप किसी को गोली से मार दो तो फाँसी की सजा मिलेगी किन्तु युद्ध के मैदान में किसी शत्रु देश की सेना के कप्तान को मार दो तो सरकार की ओर से पुरस्कार मिलेगा, महावीर चक्र दिया जाएगा जबकि काम वही है । इस तरह पाप भी बहुत प्रकार के होते हैं । चोरी छिनारी का अपराध क्षमा हो जाता है किन्तु भक्तों का अपराध क्षमा नहीं होता है । गोस्वामी तुलसीदासजी लिखते हैं कि जब रावण ने सीताजी का हरण किया तब उसका इतना नुक्सान नहीं हुआ, जितना कि जब उसने विभीषण को लात मारकर उसका त्याग कर दिया था, उस समय उसको जितना अधिक नुक्सान हुआ ।

रावन जबहिं विभीषन त्यागा । भयउ बिभव बिनु तबहिं अभागा ॥ (श्रीरामचरितमानस, सुन्दरकाण्ड - ४२)

तुलसीदासजी लिखते हैं कि देख लो, अब रावण का दुर्भाग्य जगा है । अब यह नहीं बचेगा क्योंकि इसने भक्तापराध किया है । दूसरा उदाहरण जब सीताजी को लंका में रखा गया और उनको सताया गया तब लंका का इतना नुक्सान नहीं हुआ था, जितना तब हुआ जब हनुमानजी को मेघनाद बाँधकर ले गया था, उस समय सब राक्षस हनुमानजी को लात से मार रहे थे और गाली दे रहे थे । इस भक्तापराध का यह परिणाम हुआ कि लंका जल गयी ।

साधु अवग्या कर फल ऐसा । जरइ नगर अनाथ कर जैसा ॥ (श्रीरामचरितमानस, सुन्दरकाण्ड – २६)

अनाथ की तरह लंका जल गयी । यह भक्तापराध का फल था । इसलिए भक्तापराध सबसे बड़ा अपराध है । चोरी-छिनारी इतने बड़े पाप नहीं हैं । चार तरह के अनर्थ होते हैं - दुष्कृतजात अनर्थ, सुकृतजात अनर्थ, भक्तिजात अनर्थ और सदपराधजनित अनर्थ । 'आदौ श्रद्धा ततः साधु संगोऽथ भजन क्रियाः ततो अनर्थ निवृत्तिः स्यात्' । 'दुष्कृत' माने पर स्त्री-गमन या चोरी – ये तो समझ में आता है । ये तो अनर्थ है ही लेकिन इससे भी बड़ा है सुकृत (पुण्य) जात अनर्थ – वह समझ में नहीं आता है । इन चारों अनर्थों में क्रमशः एक, एक-से बड़े हैं । पाप तो समझ में आ जाता है कि चोरी की, छिनारी की लेकिन 'सुकृतजात अनर्थ' समझ में नहीं आता है । ये क्या है ? हम लोग जो दान करते हैं कि हमारा धन बढ़ जाए, हमारा नाम हो जाए । हम कथा क्यों कह रहे हैं ताकि हमारा नाम हो जाए, पैसा मिल जाए । यह जो सुकृतजात अनर्थ है कि हमारी जो 'वासना' बढ़ती है, यह उस पाप की भी मैया है । इसको समझना बड़ा कठिन है । चोरी-छिनारी तो समझ में आ जाती है । 'पुण्य' वासना के साथ करते हैं तो यह सुकृतजात-अनर्थ है । इससे भी बड़ा एक और अनर्थ है, वह है 'भक्तिजात-अनर्थ' । भक्ति में भी बड़ा गड़बड़ है, भक्ति में बहुत अनर्थ है । वह क्या है ? भजन करने पर लोग 'भगतजी-भगतजी' कहकर आदर करते हैं । 'महाराज-महाराज' कहकर पाँव छूते हैं । इससे महाराज का खून बढ़ता है, उनका अहंकार बढ़ता है । 'महाराज' सम्मान का आहार करके मोटे हो जाते हैं । यह भक्तिजात-अनर्थ है । बड़े-बड़े कथा वाचक, बड़े-बड़े गोस्वामी, बड़े-बड़े जितने भी लोग हैं, ये भक्तिजात-अनर्थ से घिरे रहते हैं । चौथा जो अनर्थ है, वह सभी अनर्थों का बाप है, वह है सदपराधजनित अनर्थ अर्थात् भक्तापराध । वह तो किसी हालत में नहीं छोड़ता है । उदाहरण के लिए देखें – छोटे-मोटे पाप की तो बात छोड़ दो, किसी पापी ने सदपराध अर्थात् अनन्त भक्तापराध किये थे, जो सबसे बड़ा है । उस महापापी ने बड़े-बड़े महापुरुषों के अपराध किये थे । ऐसे महा-अपराधी को कभी भी क्षमा नहीं मिल सकती है । एक ही सन्त या भक्त का अपराध नाश के लिए पर्याप्त है । उदाहरण के लिए रावण और हिरण्यकशिपु । एक ही प्रह्लाद के अपराध से हिरण्यकशिपु नष्ट हो गया । उसने पाँच वर्ष के बच्चे का अपराध किया, उसी से वह नष्ट हो गया । इसलिए सदपराध (भक्त-संत का अपराध) सबसे खतरनाक है । एकबार एक सदपराधी कहीं जा रहा था । उसका कल्याण तो हो ही नहीं सकता । न उसको 'कृष्ण' क्षमा कर सकते हैं और न ही 'भगवान् की उपासना' से उसका अपराध क्षमा हो सकता है लेकिन हुआ यह कि ऐसा सदपराधी जा रहा था और उसके मुख से 'राधा' नाम निकला । वह किसी सत्संग में पहुँच गया । बड़े ही भाग्य से 'राधारानी का यश' सुनने को मिलता है । 'राधा' नाम

उसके मुख से निकला तो 'राधा' नाम सुनने के लोभ से 'श्रीकृष्ण' उसके पीछे चलने लगे । भगवान् की जो अनेक कचहरियाँ खुली हुई हैं, यमराज-धर्मराज आदि पापियों को दण्ड देने के लिए; वे भी इस महा पापी के पीछे भाग रहे हैं कि यह तो महान अपराधी है, भक्तापराध इसने बहुत किये हैं; लेकिन अब 'श्रीकृष्ण' से कौन कुछ कहे ? ये तो सर्वान्तर्यामी हैं, ये सब कुछ जानते हैं । ये संसारी राजा तो हैं नहीं, संसारी राजा के सामने तो मन्त्री या दीवान कहेगा कि इसने ऐसा किया, उसने वैसा किया । भगवान् तो सब जानते हैं लेकिन फिर भी एक बार 'राधा' नाम लेने वाले महान अपराधी के पीछे वे दौड़ गये और सोचने लगे कि मेरे पास ऐसा क्या है, जो इसको दें । अब प्रश्न हुआ कि क्या भगवान् अन्यायी हैं ? एक महान पापी जिसने एक 'राधा' नाम लिया, उसके पीछे भाग रहे हैं । नहीं, न्याय-अन्याय तो इस दुनिया के हैं । यह तो अलग बात है, यह प्रेम राज्य की बात है । यहाँ तो वही बात हुई कि जैसे – एकबार एक राजा का पुत्र खो गया और एक डाकू उसे ढूँढकर लाया तो राजा उस डाकू को इनाम देता है । राजा ने उससे कहा कि यदि तू इस लड़के को न लाता तो यह खो जाता, तेरे सब अपराध माफ़ । ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि राजा का अपने लड़के से इतना अधिक प्यार था । वही बात यहाँ भी है, श्रीकृष्ण का राधिकारानी से इतना अगाध प्रेम है कि एकबार भी जो उनका नाम लेता है तो श्रीकृष्ण भूल जाते हैं कि इसके कितने अपराध हैं और प्रेम के कारण वे सोचने लग जाते हैं कि इसको मैं क्या दूँ ? राधासुधानिधिकार कहते हैं – 'अनुल्लिख्यानन्तानपि सदपराधान् मधुपतिर्' – जिसके पाप लिखे नहीं जा सकते, जिसके पापों की कोई गिनती नहीं है, उसको श्यामसुन्दर कुछ ध्यान न देकर ऐसे सदपराधी के पीछे-पीछे भागने लगे, क्यों ? 'महाप्रेमाविष्टस्तव परमदेयं विमृशति' – राधारानी का नाम सुनकर श्रीकृष्ण महान प्रेम में भर जाते हैं । 'विमृशति' – श्रीकृष्ण सोचते हैं कि इसको मैं क्या दे दूँ ? इसने मेरी लाढ़ो 'राधिकारानी' का नाम सुनाया है । 'तवैकं श्रीराधे गृणत इह नामामृतरसम्' – एक राधा नाम लेने का यह फल है । 'महिम्नः कः सीमां स्पृशति तव दास्यैकमनसाम्' – फिर जो लोग एकमात्र राधारानी की दासता चाहते हैं, उनकी महिमा को तो 'कृष्ण' भी नहीं कह सकते हैं । अब प्रश्न है कि पाप का क्या हुआ ? अरे, पाप जलाने की तो अब आवश्यकता ही नहीं रही । पाप आयें और जलाये जाएँ, ये सब मामला ही समाप्त हो गया । वहाँ तो श्रीकृष्ण सोच रहे हैं कि इस 'राधा' नाम लेने वाले को मैं क्या दे दूँ ? इसीलिए राधारानी के प्रसंग में हमने बताया था कि क्लेश तीन प्रकार के होते हैं – पाप, बीज, अविद्या । ये जो भक्तिशास्त्र के भेद हैं और पाप के दो भेद हैं – प्रारब्ध व अप्रारब्ध । राधारानी के शास्त्र में इन सबकी चर्चा करने की जरूरत ही नहीं है । इनकी जरूरत वहाँ होती है, जहाँ देखना पड़ता है कि कचहरी में कौन-सी धारा लगी है, ३०७ लगी है कि ३१५ लगी है, वहाँ इनकी जरूरत पड़ती है । राधारानी के दरबार में इनकी आवश्यकता नहीं है । संसार में भी देखो कि यदि किसी को सुप्रीम कोर्ट से फाँसी की सजा मिल जाये तो वह बच नहीं सकता । लेकिन अभी एक रास्ता है, वह क्या है ? अगर राष्ट्रपति 'मर्सी अपील' करता है तो सुप्रीम कोर्ट का आदेश भी निरस्त हो जाता है और फाँसी की सजा पाया हुआ व्यक्ति बच जाता है । इसी प्रकार राधारानी के प्रसंग में भी जो 'राधा' नाम लेता है, उसके लिए तीन प्रकार के क्लेश पाप, बीज और अविद्या आदि निरस्त हो जाते हैं तथा श्रीकृष्ण उसके पीछे दौड़ने लग जाते हैं और सोचते हैं कि इसको क्या दे दूँ ? ये पद्धति है पाप के नाश की ।

श्रीराधिकारानी की परम विलक्षण करुणा शक्ति का गुणगान रसिक महापुरुषों ने किया है –

'आधो नाम तारिहैं श्रीराधा ।'

श्रीभगवान् ने अपनी सारी शक्ति अपने नाम में रख दी है । राधारानी का उदाहरण देखो । पूरा 'राधा' नाम लेने की आवश्यकता नहीं है । केवल 'रा' कह दो, इतने से ही राधारानी की कृपा मिल जायेगी । वे इतनी दयामयी हैं ।

'आधो नाम तारिहैं श्रीराधा ।' इस पद को श्रीजी मन्दिर के श्रीकिशोरीलाल गोस्वामीजी बहुत गाते थे । लाढ़ो की लाड़ली की करुणा-शक्ति का यह पद है । किशोरीअलीजी कहते हैं कि पूरा राधा मत कहो, केवल 'रा' कह दो, इतने से ही राधारानी आ जाएँगी । मत कहो राधा, केवल 'रा' कहो, राधारानी आ जायेंगी । इस पद की पहली कड़ी ही ऐसी बेजोड़ है कि लगता है, हजार बार इस पद को गा लो तो भी इसका मजा समाप्त नहीं होगा । कड़ी क्या रसगुल्ला है ।

अहो बिधना तोपै अचरा पसार माँगौ, जनम-जनम दीजै मोहि याहि ब्रज बसिबौ ।

आधो नाम तारिहैं श्रीराधा । 'रा' के बाद यदि 'धा' भी कह दिया तो फिर उसकी महिमा का कोई पार नहीं है । केवल 'रा' कहने से ही तुम तर जाओगे और यदि 'धा' कह दिया तो उसकी महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता ।

'जुग अक्षर की महिमा को कहै, गावत वेद पुराण अगाधा ।'

अली किशोरीजी कहते हैं कि 'राधा' नाम की महिमा कहने वाला संसार में कोई भी पैदा नहीं हुआ । गह्वरवन में 'राधा' नाम लेने पर किशोरीअलीजी को राधारानी के दर्शन हुए थे । इसलिए प्रेम से 'राधा' नाम लेना चाहिए, 'राधा' नाम लेने में शर्म नहीं करनी चाहिए । यह मुँह तो थूक का घड़ा है । यह थूक का घड़ा श्रीजी के नाम से पवित्र होगा । अतः 'राधा' नाम लेने में लज्जा-शर्म नहीं करनी चाहिए । 'रा' के कहने से ही महारानी की शक्ति से तुम्हारे जितने भी रोग-बीमारियाँ हैं, अनादि काल के विकार काम-क्रोध आदि हमारे भीतर घुसे हैं, ये सभी मानसरोग नष्ट हो जायेंगे और 'धा' के कहने से भव के जितने भी कर्मबन्धन हैं, वे सब कट जायेंगे ।

'रा के कहे रोग सब मिटिहैं, धा के कहे मिटै भव बाधा । आधो नाम तारिहैं श्रीराधा ।'

'तारिहैं' – विश्वास है, प्रतिज्ञा है, भरोसा है कि अवश्य ही तारेंगी । अलीकिशोरीजी कहते हैं कि इसीलिए मैं कोई अन्य साधन नहीं करता हूँ, अन्य कोई साधन तपस्या आदि मैं नहीं जानता हूँ ।

'अली किशोरी नाम रटत नित, लागी रहत समाधा ॥'

केवल राधा-राधा कहा और उसके प्रभाव से रस की समाधि लग गयी, आनन्द आ गया ।

गौ–सेवकों की जिज्ञासा पर माताजी गौशाला का Account number दिया जा रहा है –

SHRI MATAJI GAUSHALA, GAHVARVAN,BARSANA, MATHURA

Bank – Axis Bank Ltd , A/C – 915010000494364

IFSC – UTIB0001058 BRANCH – KOSI KALAN,

MOB. NO. – 9927916699

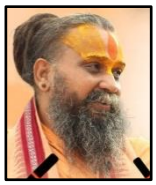

गौ-वृद्धि से ही होगी सर्वसमृद्धि

श्रीमलूक-अग्र पीठाधीश्वर 'श्रीराजेन्द्रदासजीमहाराज' द्वारा कथित 'गोभक्तमाल-कथा' (५/१०/२०२४) से संकलित

सभी देवी-देवता गौ-भक्त हैं । गणेशजी भी गौ-भक्त हैं । गौमाता की परिक्रमा करने के कारण ही गणेशजी की सबसे पहले पूजा की जाती है । ब्रह्माजी ने वत्स हरण, गोप हरण करके गौ-अपराध कितना बड़ा अपराध है, इससे बचने की प्रेरणा अपने चरित्र के माध्यम से दी । भगवान् विष्णु भी बहुत बड़े गौभक्त हैं ।

को हरि सम गो को भगत क्षीरोदधि निज वास कियो ।
सर्वोपरि गोलोक कियो सत चित सुखदायी । भूरि श्रृंग जहाँ धेनु वेद ने महिमा गायी ॥

भगवान् श्रीहरि के समान कौन गौ का भक्त है, जिन्होंने अपना निवासस्थान ही क्षीरसागर को बनाया । क्षीरसागर का अर्थ है आदि गौ-सुरभि का दूध अर्थात् गाय का वात्सल्य । गौमाता की वात्सल्यमयी अंक, जो क्षीरसमुद्र है, उसी को भगवान् ने अपना आश्रय स्थल बनाया । सदा क्षीरसागर-शयन मानो गो के वात्सल्य सिन्धु में ही भगवान् विलास

कर रहे हैं । सर्वोपरि गोलोक को प्रतिष्ठित किया, जो सच्चिदानन्द स्वरूप है, जिसके बारे में वेद में वर्णन है कि वहाँ बड़ी-बड़ी सींगों वाली गायें हैं, ऐसी वेदों में ऋचा आई है । भगवान् के जितने भी अवतार हैं, गोमाता की पुकार सुनकर ही भगवान् अवतार लेते हैं । भगवान् गौसेवा का आदर्श अपने प्रत्येक अवतार में प्रकट करते हैं । भगवान् की विविध लीलाओं को गाया गया है, उन लीलाओं में गौमाता अवश्य ही कहीं न कहीं प्रधान रूप से विद्यमान रही । भगवान् के दस अवतार कहें या चौबीस अवतार कहें अथवा असंख्य अवतार कहें, उन समस्त अवतारों में गौमाता की ही प्रधान भूमिका है । ऐसा प्रतीत होता है कि अर्चावतारों के प्राकट्य में भी गौमाता की भूमिका है । वृन्दावन में गोमा टीले पर ठाकुर श्रीराधा-गोविन्द प्रकट हुए तो श्रीरूप गोस्वामीजी को भगवान् ने ध्यान में या स्वप्न में आदेश दिया कि गोमा टीले पर सुरभि गाय आती है और अपने दुग्ध से मेरा अभिषेक करती है, मुझे दुग्ध पान कराती है । उसी पहचान से उस टीले को खोदा गया तो उसमें से श्रीराधा-गोविन्द देव प्रकट हुए, जो मुगलकाल में सुरक्षा की दृष्टि से जयपुर ले जाए गये । आज भी जयपुर में श्रीराधा-गोविन्द देव विराजमान हैं । अनेक देवी-देवता जैसे शिवजी के स्वरूप, गणेशजी के स्वरूप, देवीजी के स्वरूप, उनके पीछे भी लोग यही कथा सुनाते हैं कि यहाँ गाय आकर अपने दूध से सींचती थी और गाय की कृपा से वह विग्रह प्रकट हुआ । ऋग्वेद में स्पष्ट लिखा है – **यत्र गावो भूरिश्रृंगाः अयासः ।** वही सच्चिदानन्द स्वरूप गोलोक है, जहाँ बड़ी-बड़ी सींगों वाली गायें रहती हैं । भगवान् ने अपनी नाभि से कमल प्रकट किया, कमल से ब्रह्माजी का अविर्भाव हुआ और द्वादश महाभागवतों में प्रथम महाभागवत श्रीब्रह्माजी हैं । उन ब्रह्माजी को भगवान् ने आदेश दिया कि तुम यज्ञ के सहित प्रजा की सृष्टि करो । इसका संकेत श्रीमद्भगवद्गीता में है ।

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः । अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक् ॥ (श्रीगीताजी ३/१०)

भगवान् ने ब्रह्माजी से कहा कि यज्ञ के सहित तुम प्रजा की सृष्टि करो । ब्रह्माजी ने भगवान् से कहा – 'महाराज ! यज्ञ कैसे होगा ? आप कहते हैं कि यज्ञ के सहित सृष्टि करो ।' तब ब्रह्माजी ने यज्ञ के हेतु गाय को प्रकट किया और यज्ञ का विधान वैदिक ऋचाओं से सम्पन्न कराने के लिए ब्राह्मणों को प्रकट किया । यह महाभारत में स्पष्ट लिखा है –

'धेनूनां सैव विप्राणां कृतमेकं द्विधा कृतम्' गौ और ब्राह्मण का कुल एक ही था । ब्रह्माजी ने भगवान् की आज्ञा से दो भाग कर दिए । एक में हव्य-कव्य को प्रतिष्ठित कर दिया तो दूसरे में मन्त्रों की प्रतिष्ठा कर दी । जिसमें हव्य–कव्य की प्रतिष्ठा की, वह हुई गाय और जिसमें मन्त्रों की प्रतिष्ठा की, वे हुए ब्राह्मण । जब गौ और ब्राह्मण की सृष्टि हुई, यज्ञ होने लगे तो सारी सृष्टि प्रसन्न हो गयी । यही कारण है कि गौ और ब्राह्मणों के प्रति भगवान् का बड़ा प्रेम है । वे सृष्टि के उद्धारक तत्त्व हैं । वर्तमान समय ऐसा आ गया है कि गाय का नाम अधिक पढ़े-लिखे लोग पसन्द नहीं करते हैं । मैं उनको पढ़ा-लिखा तो नहीं मानता, मैं समझता हूँ कि उनको अपने ज्ञान का, अपनी बुद्धि का, अपने बुद्धिजीवी होने का अजीर्ण हो गया है, अपच हो गयी है । वे गाय के महत्त्व को नहीं समझते हैं । वे कहते हैं कि ये महात्मा लोग क्या गाय-गाय करते रहते हैं, क्या मतलब है गाय का ? राष्ट्र की बात करनी चाहिए परन्तु मैं बड़ी विनम्रता के साथ यह बात निवेदन कर रहा हूँ कि आदि काव्य श्रीवाल्मीकि रामायण में उल्लेख है कि जब विश्वामित्रजी ने रामचन्द्रजी को आज्ञा दी कि तुम ताड़का का वध करो, उस समय रामजी ने कहा – **गौब्राह्मणहितार्थाय देशस्य च हिताय च..... ।**

भगवान् श्रीराम कह रहे हैं कि गौ और ब्राह्मण के हित के लिए तथा राष्ट्र के हित के लिए आपकी आज्ञा से मैं ताड़का वध के लिए प्रस्तुत होता हूँ । हम लोग देश में राम राज्य स्थापित करना चाहते हैं । राम राज्य स्थापित हो, इसीलिए देश की स्वतन्त्रता की आवश्यकता थी । जब गुलामी थी, उस समय सभी ने कहा था कि राम राज्य की स्थापना तभी हो सकती है, जब देश गुलामी की जंजीरों से मुक्त हो और ये गौ-विरोधी, गौमाँस-भक्षी नीच असुर अंग्रेज भारत की पवित्र धरती पर न रहें, यहाँ से निकल जाएँ । यही बात महात्मा गाँधीजी ने भी कही थी कि जिस दिन देश स्वतन्त्र होगा, कलम की पहली नोक से गौवध पर पूर्ण निषेध का कानून बनाया जायेगा । देश ने अपनी आजादी का अमृत महोत्सव भी बना लिया किन्तु गौवध आज भी हो रहा है । गौमाँस का निर्यात आज भी हो रहा है । यह दुःख की, पीड़ा की बात है कि

प्रगट जगत में जगमगै वृन्दा विपिन अनूप । नयन अछत दीखे नहीं यह माया को रूप ॥

नहीं ? जबकि कहा यह गया था कि राम राज्य स्थापित होगा । राम राज्य की चर्चा सब करते हैं पर राम राज्य कैसे स्थापित होगा, इस बारे में लोग विचार नहीं करते हैं । जिन रामजी के राज्य को आदर्श मानकर हम लोग राम राज्य की कल्पना करते हैं, वे भगवान् श्रीराम कह रहे हैं कि गौ और ब्राह्मण के हित से ही राष्ट्र का हित होगा । आज हम कहते हैं कि राष्ट्र हित सर्वोपरि है लेकिन गाय का नाम मत लो, ब्राह्मण का नाम मत लो । बिना गौ-ब्राह्मण के हित के राम राज्य की स्थापना धर्म प्राण भारतवर्ष की धरती पर कभी नहीं हो सकती । आप लोग कहेंगे कि ब्राह्मण क्यों, अन्य वर्ण क्यों नहीं ? देखिये, मस्तक विहीन व्यक्ति की पहचान नहीं होती है । जिसका सिर न हो, केवल धड़ ही हो, उसकी पहचान नहीं हो सकती । मस्तक से पहचान होती है । मस्तक ब्राह्मण है, भुजायें क्षत्रिय है, वैश्य जंघा है, शूद्र चरण है । ब्राह्मण के हित से क्या होगा ? सूक्ष्मता से विचार करें तो ब्राह्मण के हित से सम्पूर्ण मानव जाति का हित होगा । आप कहेंगे कि सम्पूर्ण मानव जाति का हित कैसे होगा ? ब्राह्मण जब अपने स्वरूप में प्रतिष्ठित होगा, ब्रह्मत्व में प्रतिष्ठित होगा तो क्षत्रिय भी सन्मार्ग पर चलने वाले होंगे, गौ-ब्राह्मण के उपासक होंगे, वैदिक धर्म परायण होंगे । इस तरह ब्राह्मण के अपने स्वरूप में प्रतिष्ठित होने से क्षत्रिय अपने धर्म में प्रतिष्ठित होगा और जब क्षत्रिय अपने धर्म में प्रतिष्ठित हो जाएगा तो क्षत्रियत्व के प्रतिष्ठित होते हुए, क्या यह सम्भव है कि कोई गाय पर अत्याचार कर सके, कोई दुर्बल पर अत्याचार कर सके, कोई साधु-सन्त को सता सके, कोई स्त्रियों को सता सके, कोई अनाचार-अत्याचार कर सके । क्षत्रियत्व के प्रतिष्ठित होने के बाद क्या यह सम्भव है ? चारों वर्णों और चारों आश्रमों की प्रतिष्ठा गाय करती है । गाय के नष्ट होने से ब्राह्मणत्व नष्ट हुआ, ब्राह्मणत्व के नष्ट होने से क्षत्रियत्व नष्ट हुआ, वैश्यत्व नष्ट हुआ, शूद्रत्व नष्ट हुआ, स्त्रीत्व नष्ट हुआ । सभी के धर्म नष्ट हुए । क्षत्रियत्व हो और गाय कटती रहे, क्या यह सम्भव है ? गाय को कोई क्रूर दृष्टि से देख सके, क्या यह सम्भव है, स्त्रियों पर कोई अत्याचार कर सके, क्या यह सम्भव है, राष्ट्र को कोई टेढ़ी नजर से देख सके, क्या यह सम्भव है ? गाय के नष्ट होने से ब्राह्मण नष्ट हुआ, ब्राह्मण के नष्ट होने से क्षत्रिय नष्ट हुआ और जब गाय, ब्राह्मण, क्षत्रिय नष्ट हो गये तो वैश्य भी नष्ट हो गये । आप कहेंगे कि वैश्य नष्ट हो गये, ये कैसे कहा जा सकता है ? भगवान् श्रीकृष्ण गीता (१८/४४) में कहते हैं – **'कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्'** ये स्वभावज, स्वाभाविक कर्म हैं, सहज कर्म हैं अर्थात् वैश्य वर्ण की यह प्रकृति है, यह उसके स्वभाव में है कि वह कृषि करे, गौ-रक्षा करे और वाणिज्य (व्यापार) करे । इस श्लोक में कृषि और वाणिज्य के मध्य में गाय को रखा गया है, गौ रक्षा को मध्य में रखा गया है । इसका मतलब है कि गौ सेवा - गौ रक्षा अंगी है और कृषि एवं वाणिज्य उसके अंग हैं । अंग और अंगी में अंगी प्रधान होता है । गाय अंगी है । वैश्य वर्ण का नष्ट होना क्या है कि आज वैश्य वर्ण के होते हुए भी गाय कूड़े-कचरे के ढेर पर खड़ी हुई है, पन्नी-पोलीथीन खा रही है । गायों के चरागाह नष्ट हो गये । आज गायें दुःखी हैं, दुर्बल हैं । वैश्यत्व जागृत हो तो क्या एक भी गाय इस तरह बाहर घूमती दिखाई पड़ेगी ? वैश्यों ने कृषि छोड़ दी । कृषि गाय का अभिन्न अंग है । गौ आधारित कृषि ही दैवी कृषि है और जो गौ आधारित कृषि नहीं है, वह आसुरी है । आज की रासायनिक खेती के कारण कितने ही निरपराध प्राणियों की हिंसा हो रही है । खाद्यान्न के नाम पर जहर दिया जा रहा है, साग-सब्जी के नाम पर जहर दिया जा रहा है । हिमाचल प्रदेश में एक महात्मा गौ-सेवा का कार्य करते हैं, उन्होंने मुझे बताया कि हमारे हिमाचल प्रदेश में सेब होता है लेकिन आज यहाँ सेब के बागानों में जो कीटनाशक दवाओं का प्रयोग किया जाता है, उसे आप देख लोगे तो सेब खाना भूल जाओगे । इतना अधिक कीटनाशक रसायनों का प्रयोग वहाँ किया जाता है । उन महात्मा से मैंने पूछा तो फिर ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए ? उन्होंने कहा कि पहले बढ़िया गरम जल से सेब को धोना चाहिए, फिर उसका छिलका पूरा उतार देना चाहिए, उसके बाद ठाकुरजी को अर्पित करके सेब को खाना चाहिए । उन महात्मा ने कहा कि मैं हिमाचल प्रदेश में रहता हूँ किन्तु सेब बिलकुल भी नहीं खाता हूँ । रसायनों के प्रयोग के कारण सब चीज जहरीली हो गयी है क्योंकि गाय की छत्र-छाया अब कृषि से हट गयी है । आप लोग तो बहुत पढ़े-लिखे हैं, यह विचार कीजिये कि क्या मुगलकाल में किसानों पर अत्याचार कम हुए, कितना अधिक लगान उनसे वसूला गया । अंग्रेजी शासनकाल में अंग्रेजों

के द्वारा कितनी जमीनों का लगान लगाया गया और जो लगान नहीं भरते थे, अंग्रेज लोग उनकी जमीन जब्त कर लेते थे । किसान लगान नहीं दे पाते थे किन्तु उस अवस्था में भी भारतीय किसान ने कभी आत्महत्या नहीं की और आज स्वतन्त्र भारत में किसान आत्महत्या कर रहा है । इसका कारण एक ही था कि पहले हमारे देश की कृषि-व्यवस्था गौ-आधारित थी । गौ-आधारित कृषि-व्यवस्था का यह लाभ कि गाय रहने से बीज अपने घर का, बाजार से नहीं खरीदना पड़ता । खाद अपने घर की, खाद भी खरीदनी नहीं, बीज भी खरीदना नहीं और डीजल-पेट्रोल भी खरीदना नहीं, वृषभ अपने घर के, गोमाता के बछड़े ही वृषभ बन गये तो बैल अपने । इस तरह खाद अपनी, बीज अपना, वृषभ (बैल) अपने, श्रम अपना और भूमि अपनी । ऐसी स्थिति में वह दुर्दिन कैसे आ सकता है कि किसान आत्महत्या करे । किसान को हम लोग अन्न दाता कहते हैं । किसान को भूमिपुत्र भी कहते हैं । अब ये बताओ कि जो पुत्र अपनी माता की सेवा करता है, वह पुत्र कहलाने के योग्य है अथवा जो अपनी माता को भोजन के नाम पर विष दे, वह पुत्र कहलाने के योग्य है ? धरती माता है और किसान पुत्र है लेकिन वह खेती के नाम पर अपनी माता को विष दे रहा है । माता को विष देने का परिणाम है कि किसान आज आत्महत्या कर रहा है । माता को विष क्यों दिया जा रहा है क्योंकि इस देश में गौ आधारित कृषि की हजारों वर्षों की परम्परा थी लेकिन किसान आज गाय को भूल गया तो इसका परिणाम यह हुआ कि किसान आज आत्महत्या करने के लिए मजबूर हो गया । सच्चे अर्थों में किसान उस समय गुलाम नहीं था, जब देश गुलाम था लेकिन आज जब देश स्वतन्त्र है तो किसान गुलाम है । गुलाम क्यों है ? उसको रासायनिक खाद के लिए मुँह देखना पड़ता है सब्सिडी का और दुकानदारों का, सरकार का । कर्ज भी लेना पड़ता है, बीज भी खरीदना पड़ता है और डीजल-पेट्रोल भी खरीदना पड़ता है । कहीं ओला पड़ गया, कोई अनावृष्टि हो गयी तो मुआवजे के रूप में किसानों तक कितना पहुँच पाता है । गौ-अपराध के कारण किसान नष्ट हो रहे हैं । मेरी प्रार्थना है कि अधिक नहीं, कम से कम ब्रज में हम लोग उदाहरण प्रस्तुत कर सकें - एक गाँव, दो गाँव, तीन गाँव, फिर एक तहसील, एक ब्लॉक – इस प्रकार से व्यवस्थित कार्य किया जाए कि कम से कम एक ग्राम पंचायत से ब्लॉक और फिर पूरी तहसील, फिर पूरा जनपद भारत के सामने आदर्श प्रस्तुत करे कि ब्रजमण्डल का अमुक जिला, भरतपुर जिला या मथुरा जिला आज पूरी तरह से रासायनिक खेती से विमुक्त है, वहाँ गौ-आधारित कृषि हो रही है और उससे किसान इतना लाभ ले रहा है तथा इतना खुशहाल है । इस तरह हम पूरी दुनिया को प्रेरणा दे सकें ।

वैश्य के कृषि और गाय छोड़ देने से कृषि विषयुक्त हो गयी । वाणिज्य की स्थिति ऐसी है कि आज के पचास वर्ष पहले क्या किसी ने सुना है कि कोई वैश्य कभी शराब का काम करता हो, माँस का काम, चमड़े का काम करता हो लेकिन आज ऐसे लोग दिखाई पड़ जायेंगे और दुहाई देंगे कि अरे महाराज ! ये सब पुरानी बातें हो गयीं, व्यापार में तो सब कुछ चलता है । जिस प्रकार धन आवे, वही काम करना चाहिए । ये है वैश्यत्व का विनाश । स्कन्द पुराण में सृष्टि के प्रकरण में यह बात स्पष्ट लिखी हुई है कि गौ-वंश की सेवा और ब्राह्मण अपने धर्म का निर्विघ्न रूप से पालन कर सकें, इसके लिए ब्रह्माजी ने शूद्र की सृष्टि की । शूद्र की सृष्टि गौ-रक्षा व गौ-सेवा के लिए है किन्तु आज शूद्र वर्ण भी उससे उदासीन हो गया है । वर्तमानकाल में सनातन धर्म के शत्रु बहकाते हैं कि गाय की महिमा कहने वाले मनुवादी हैं और शूद्र वर्ण से कहते हैं कि तुम मनुवादी नहीं हो । अरे भाई ! तुम मनुवादी नहीं हो तो क्या दनुवादी हो ? यदि दनुवादी हो तो तुम मानव कैसे माने जाओगे ? मानव माने जाओगे कि दानव ? यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति गाय की उपेक्षा के कारण हुई । इसलिए ब्राह्मण की सुरक्षा गाय की सुरक्षा से होगी और जब ब्राह्मणत्व सुरक्षित होगा तो क्षत्रियत्व सुरक्षित हो जायेगा, वैश्यत्व सुरक्षित हो जायेगा, शूद्रत्व सुरक्षित हो जायेगा और फिर गौवंश प्रसन्न रहेगा । पूज्य श्रीबाबा महाराज के मुख से मैंने महाभारत का यह श्लोक सुना है – **निविष्टं गोकुलं यत्र श्वासं मुञ्चति निर्भयम् ।**

विराजयति तं देशं पापं चास्यापकर्षति ॥ (महाभारत, अनुशासनपर्व ५१/३२)

निरन्तर श्रीजी का ध्यान रहे, नामसंकीर्तन आदि साधन और महापुरुष का संग ये तीन चीजें जहाँ हैं, वहाँ प्रतिकूल भाव नष्ट हो जाता है

यह श्लोक मैंने सबसे पहले श्रीबाबा महाराज की ही वाणी से सुना था । इस श्लोक का अर्थ है कि जहाँ गायों का समूह सुखपूर्वक विराजमान होकर श्वास-प्रश्वास लेता है (जहाँ गायें सुखपूर्वक साँस लेती हैं), वह सारा देश सुशोभित हो जाता है, दिव्य शोभा से युक्त हो जाता है और वहाँ के सारे पापों का अपकर्षण गाय अपने श्वास-प्रश्वास से कर लेती है अर्थात् वहाँ के सम्पूर्ण पापों को गाय अपने साँस से खींच लेती है । नकारात्मक ऊर्जा को गाय समाप्त कर देती है । इसलिये ब्राह्मण कहने से पूरी मानव जाति आ जाएगी । अतः आज के लोगों को ब्राह्मण नाम से चिढ़ना नहीं चाहिए । ब्राह्मण कहने से सम्पूर्ण मानव जाति आ गयी । शरीर के किसी अंग में पीड़ा हो तो उसकी चिन्ता किसको होती है, मस्तिष्क को होती है, अंग की पीड़ा को दूर करने का प्रयास कौन करता है, मस्तिष्क ही विचार करता है कि डॉक्टर के पास चलो, दवा लो । इसका आशय यह हुआ कि समाज के प्रत्येक वर्ग की पीड़ा का अनुभव करके उस पीड़ा को मुक्त करने वाली जो जाति है, वह ब्राह्मण है । इसलिए ब्राह्मण सबके उपकारक हैं और गाय तो इतनी उपकारिका है कि स्वेदज, अण्डज, जरायुज, उद्भिज्ज – चारों प्रकार की सृष्टियाँ गाय से पोषण प्राप्त करती हैं । देवताओं को गाय से पोषण प्राप्त होता है । पितरों को कव्य के द्वारा गाय से पोषण प्राप्त होता है । ऋषियों को गव्य पदार्थों के द्वारा गाय से पोषण प्राप्त होता है । इसलिए 'गाय' जगद्धात्री, जगत् की जननी पूज्या गौमाता है ।

भये साकार सगुण लीला सुख चाह भई, प्रथम भक्त ब्रह्माजी को यज्ञ समझायौ है ।
यज्ञ हेतु गौ औ ब्राह्मण की सृष्टि होके, प्रसन्न देव सब सुख उपजायौ है ॥
याते गौ ब्राह्मण के प्रति हरि को प्रेम अधिक ।

क्योंकि गौ-ब्राह्मण दोनों ही सृष्टि के उपकारक हैं । इनके बिना सुखमयी सृष्टि सम्भव नहीं है । इसलिए

याते गौ ब्राह्मण के प्रति हरि को प्रेम अधिक, दोनों उपकारक सब सृष्टि पायौ है ।
गाय रूप धरा जब हरि पै पुकार करै, लियो अवतार हरि धरा धाम आयौ है ॥

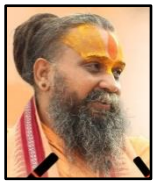

परममंगल मूल 'गौमाता'

श्रीमलूक-अग्र पीठाधीश्वर 'श्रीराजेन्द्रदासजीमहाराज' द्वारा कथित 'गोभक्तमाल-कथा' (५/१०/२०२४) से संकलित

एक बार ब्राह्मणों के शाप के कारण भगवान् शंकर के शरीर में बड़ी पीड़ा उत्पन्न हुई, दाह उत्पन्न हो गया, बहुत जोर की जलन होने लगी । इससे बचने के लिए वे हिमालय में चले गये, बर्फ में गये, ठण्डी से ठण्डी जगह गये किन्तु उनकी जलन शान्त नहीं हुई । तब भगवान् शिव गोलोक पधारे और वहाँ जाकर उन्होंने सुरभि माता के चरणों में साष्टांग प्रणाम किया और कहा – 'हे सुरभि माता ! मैं आपकी शरण में आया हूँ । मेरे शरीर में ब्रह्म (ब्राह्मण) अपराध से भयंकर दाह उत्पन्न हो रहा है । आप ही ब्राह्मणों के शाप से उत्पन्न इस दाह का शमन करो । मैं आपकी शरण में हूँ ।' ऐसा कहकर भगवान् शिव ने गाय की स्तुति की । यह स्कन्द पुराण का बड़ा ही सुन्दर कथानक है । स्कन्द पुराण के नागर खण्ड में भगवान् शिव सुरभि की स्तुति करते हैं ।

सृष्टि स्थिति विनाशानां कर्त्र्यै मात्रे नमो नमः । यात्वं रसमयैर्भावैराप्याययसि भूतलम् ॥

सृष्टि को उत्पन्न, पालन और संहार करने वाली हे जगत्माता सुरभि ! आपको मैं प्रणाम करता हूँ । आपका जो रसमय स्वरूप है, प्रेममय स्वरूप है, आपने अपने गव्य पदार्थों से पूरे ब्रह्माण्ड को तृप्त कर दिया है । आप न होती तो यह ब्रह्माण्ड नीरस हो जाता । आपने इसे सरस बना दिया है ।

देवानां च तथा संघान् पितृणामपि वै गणान् । सर्वैर्ज्ञात्वा रसाभिज्ञैर्मधुरास्वाददायिनी ॥

देवताओं के समूह को, पितृगणों को आप अपने हव्य और कव्य से सन्तुष्ट करने वाली हो ।

त्वया विश्वमिदं सर्वं बलस्नेहसमन्वितम् । त्वं माता सर्व रुद्राणां वसूनां दुहिता तथा ॥

आठ गाँठ कौपीन में औ भाजी बिनु लोन । तुलसी रघुबर उर बसैं, इंद्र बापुरो कौन ॥

हे भगवती गौ माता ! आपके बल और स्नेह से यह सारा विश्व बलवान और स्नेहवान (प्रेमयुक्त) है । बल और प्रेम आपकी ही कृपा से विश्व में, ब्रह्माण्ड में है । आप सम्पूर्ण एकादश रुद्रों की माता हैं तथा द्वादश अष्ट वसुओं की आप दुहिता हैं ।

आदित्यानां स्वसा चैव तुष्टा वांछित सिद्धिदा । त्वं धृतिस्त्वं तथा तुष्टिस्त्वं स्वाहात्वं स्वधा तथा ॥

द्वादश आदित्यों ने आपको अपनी बहन के रूप में स्वीकार किया है । आप धृति हो, संतोष हो, स्वाहा और स्वधा हो ।

ऋद्धिः सिद्धिस्तथा लक्ष्मीर्धृतिः कीर्तिस्तथामतिः । कान्तिर्लज्जा महामाया श्रद्धा सर्वार्थसाधिनी ॥

आप ही ऋद्धि, सिद्धि, लक्ष्मी, धृति, कीर्ति, बुद्धि, कान्ति, लज्जा, महामाया, श्रद्धा और सर्वार्थसाधनी हो । ऐसी हे गौ माता ! मैं आपको प्रणाम करता हूँ । आप मेरी रक्षा करो । **(स्कन्दपुराण, नागरखण्ड)**

शिवजी के द्वारा की गयी इस स्तुति से सुरभि गौमाता प्रसन्न हो गयीं और उसने अपना मुख खोला तथा शिवजी से कहा – 'तुम मेरे मुख के मार्ग से मेरे उदर में चले जाओ । सारी जलन शान्त हो जायेगी । ब्रह्मशाप दुर्निवार है, पर उसका भी निवारण हो जाएगा ।' सुरभि गाय ने जैसे ही अपना मुख खोला, उसके मुख मार्ग से शिवजी उसके पेट में चले गये और वहीं नील वृषभ के रूप में आनन्दपूर्वक निवास करने लगे । अब तो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में हाहाकार मच गया । देवताओं ने कहा कि शिवजी के बिना कैसे काम चलेगा ? शिवजी का पता लगाओ । देवताओं ने पूरे ब्रह्माण्ड में खोज लिया किन्तु शिवजी का पता नहीं लगा । तब ब्रह्माजी सभी देवताओं को लेकर भगवान् विष्णु के पास पहुँचे और पूछा कि शिवजी कहाँ हैं ? खोजने से मिल नहीं रहे हैं । भगवान् मुस्कुराये और बोले कि शिवजी तो इस समय गोलोक में हैं । वहाँ गौमाता के पेट में हैं । तब देवता भगवान् की आज्ञा से ब्रह्माजी के सहित गोलोक में गये और वहाँ उन्होंने सुरभि माता की स्तुति की । सुरभि माता ने प्रसन्न होकर नील वृषभ के रूप में भगवान् शिव को प्रकट किया । देखिये, शिवजी को धारण करने वाले नन्दी भी शिव ही हैं क्योंकि शिव को शिव ही धारण कर सकते हैं, दूसरा कोई धारण नहीं कर सकता है । नील वृषभ भी स्वयं वे ही हैं । शिवजी सुरभि गाय के मुख मार्ग से उसके उदर में प्रविष्ट हुए और गाय के योनि मार्ग से बाहर निकले, इसलिए गाय के पृष्ठ भाग (योनि मार्ग) से चाहे मूत्र निकले चाहे गोमय (गोबर) निकले, वह अत्यन्त ही पवित्र है क्योंकि भगवान् सदाशिव वहाँ से प्रकट हुए । गौ मूत्र साक्षात् गंगाजी का स्वरूप है और गोबर लक्ष्मी का स्वरूप है ।

देवताओं ने सुरभि की स्तुति की तो सुरभि ने नील वृषभ को प्रकट कर दिया । अब तो सबने शिवजी को पहचानकर उनके चरणों में प्रणाम किया । उस समय देवताओं ने गोलोक की गायों की स्तुति की । गोलोक में कौन-कौन सी गायें हैं, पुराणों में उनके नाम लिखे हैं । गोलोक की गायों के ये नाम हैं – नन्दा, सुमनसा, स्वरूपा, सुशीलका, कामिनी, नन्दिनी, मेध्या, हिरण्यदा, धनदा, धर्मदा, नर्मदा, सकलप्रिया, वामना, लम्बिका, कृष्णा, दीर्घशृंगा, सुपिच्छिका, तारा, तोयिका, शान्ता, दुर्विषह्या, मनोरमा, सुनासा, गौरा, गौरमुखी, हरिद्रावर्णा, नीला, शंखिनी, पञ्चवर्णिका, विनता, अभिनता, भिन्नवर्णा, सुपत्रिका, जया, अरुणा, कुण्डोघ्नी, सुदती और चारु चम्पिका । इतनी गायों के प्रकार हैं । उनके यूथ के मध्य में भगवान् शिव नीलवृषभ के रूप में विचरण कर रहे थे । उस समय देवताओं और ऋषियों ने वृषभ रूप में भगवान् शिव की स्तुति की – हे देव ! तुम नील वृषभ रूप भगवान् हो । जो मनुष्य तुम्हारे साथ पाप का व्यवहार करेगा, वह वृषल होगा । उसे रौरवादि नरकों की यातना भोगनी पड़ेगी ।

देवता यह वृषभ से कह रहे हैं । वृषभ साक्षात् शिवरूप है । नर-गौवंश का जितना तिरस्कार इस समय देश में हो रहा है, उतना तिरस्कार किसी का नहीं हो रहा है । सड़कों पर ज्यादा से ज्यादा नर-गौवंश है । माताजी गौशाला में कसाइयों से बचाये हुए गौवंश में नर-गौवंश ही अधिक हैं । जड़खोर की गौशाला में भी लगभग सात हजार नर-गोवंश है । पथमेड़ा की गौशाला में तो एक ही गोष्ठ में कम से कम बीस हजार नर-गोवंश है, उसे नन्दीशाला कहते हैं । वहाँ हर गायों में नन्दियों की संख्या अधिक है । आज वहाँ जितना भी गोवंश है, उसमें अधिक संख्या नर गोवंश की है ।

आवत गाली एक है पलटत होय अनेक । कबीरा ताही न पलटिए रही एक की एक ॥

स्कन्द पुराण में लिखा है, देवता और ऋषियों ने कहा है – 'हे वृषभ ! तुम शिव रूप हो । जो मनुष्य तुम्हारे साथ पापयुक्त व्यवहार करेगा, वह वृषल होगा, रौरवादि नरकों में उसे यातना भोगनी पड़ेगी । जो तुम्हें पीड़ा पहुँचाता है, पैरों से मारता है, गाढ़े बन्धनों से बाँधकर भूखा-प्यासा रखता है, उस मनुष्य का कभी कल्याण नहीं हो सकता ।' ऋषियों की स्तुति से नील वृषभ प्रसन्न हो गये । सभी ने वृषभ रूप भगवान् शिव को प्रणाम किया । उस समय ब्राह्मणों ने कहा कि जो एकादशाह के दिन नील वृषभ को वाम भाग में चक्र तथा दाहिने भाग में शूल अंकित करके स्वस्थ गायों के समूह में छोड़ देगा, उसके पितरों को विष्णुलोक की प्राप्ति हो जाएगी और वह वृषभ संसार का कल्याण करता रहेगा । इस अवस्था में उस वृषभ की रक्षा देवता करेंगे । वृषोत्सर्ग करने वाले के पुण्य का वर्णन चित्रगुप्त अपने खाते में नहीं लिख सकते हैं । शेषजी भी उसके पुण्यों का वर्णन नहीं कर सकते । ऐसा स्कन्द पुराण में लिखा है ।

आज गोवंश की नस्ल धीरे-धीरे क्षरण को जा रही है । कितनी पवित्र परम्परा थी हमारे धर्मशास्त्रों में कि उत्तम प्रजाति के वृषभ छोड़े जाते थे और उन वृषभों को कोई रोकता-टोकता नहीं था । वे यदि किसी की खड़ी फसल में चले जाते तो किसान प्रसन्न होते थे कि भोले बाबा के नन्दी भगवान् हमारे खेत में आ गये, अब हमारे यहाँ अन्न-धन की कमी नहीं पड़ेगी । अब तो स्थिति यह है कि नस्ल संहार हो रहा है । नस्ल संहार कैसे हुआ ? वध शालाओं में तो जाकर नस्ल संहार हुआ ही और हो रहा है । इसके अतिरिक्त नस्ल संहार का मूल कारण यह है कि इस भारत जैसे पवित्र देश में गाय के नाम पर यहाँ दूसरा पशु जर्सी आ गया और उसी के नकारा वृषभ घूम रहे हैं तथा देशी गायें भी घूम रही हैं । उनसे हमारे देश की सारी नस्ल बिगड़ गयी । हिमालय क्षेत्र की बद्रीश गाय बहुत छोटी गाय है । वह दूध बहुत कम देती है पर उसके घी में बड़ी दिव्य सुगन्ध है । उसका मूत्र, उसका गोमय (गोबर), उसका दूध, गुणवत्ता में मैदान की गाय से बहुत अधिक श्रेष्ठ है । उसके दूध में मिठास भी बहुत अधिक है, पौष्टिक भी बहुत अधिक है । भगवत्कृपा से उत्तरकाशी क्षेत्र में अपने ठाकुरजी के स्थान में, जो गंगाजी ने दिया है, वहाँ बद्रीश नस्ल के संरक्षण और सम्वर्धन का कार्य भगवत्कृपा से चल रहा है । गाँव-गाँव में घूमकर खोजना पड़ता है कि शुद्ध बद्रीश नस्ल की कोई बछिया मिल जाए । आज यह स्थिति हो रही है । शुद्ध नस्ल की गाय उत्तराखण्ड में जर्सी के प्रवेश के कारण, जर्सी वृषभों के कारण शुद्ध गाय की नस्ल इतनी अधिक दूषित हुई कि उत्तराखण्ड क्षेत्र में जो मूल प्रजाति की गाय बद्रीश है, भगवान् के नाम से ही उस नस्ल का नाम बद्रीश है, वह नस्ल अब विलुप्त हो रही है । कृत्रिम गर्भाधान से भी नस्ल संहार और जर्सी नर वृषभ के आने से भी शुद्ध गाय की नस्ल का संहार हो रहा है । नस्ल संहार होने से आगे कितनी नस्ल लुप्त हो गयीं । अभी दक्षिण भारत में गाय की एक नस्ल है - कुंगूर । उसकी स्वाभाविक नस्ल तो छोटी है, वह एकदम शुद्ध है, उसमें कोई मिलावट नहीं है लेकिन अब कुछ सिरफिरे लोगों ने उसमें भी कुछ खींचतान करके उसके तत्त्व निकालकर विज्ञान का प्रयोग नहीं बल्कि विज्ञान का दुष्प्रयोग करके उसको और छोटी बना दिया है । विज्ञान का दुष्प्रयोग करके उस नस्ल को बिल्ली जैसा, कुत्ता जैसा छोटा बना दिया है । हमने सुना है कि अमीर लोग उसको १५-१६ लाख रुपये में खरीदकर अपने फ्लैटों में रख रहे हैं और इस तरह वे गो सेवा के महाअभियान से विमुख होते चले जा रहे हैं । अब लोग कहते हैं कि हम तो अपने घर में गाय रखते हैं, उनको रोटी दे देते हैं । हमें अब गो सेवा करने की आवश्यकता नहीं है । गौ का प्रेम लोगों में न जागृत हो, ये हम नहीं कह रहे हैं, होना चाहिए लेकिन क्या इसका यह स्वरूप होना चाहिए जो इस समय हो रहा है ।

हे राधारानी ! ऐसी कृपा करो कि श्रीमाताजी गोशाला में इतना विस्तार हो, इतना विस्तार हो कि माताजी गोशाला के माध्यम से कम से कम १२ लाख गो वंश ब्रज में सुखपूर्वक निवास करे और श्रीजी की कृपा से ऐसा होगा । आज इतनी विशाल गोशाला की स्थापना के बाद भी श्रीजी के प्रति पूज्य श्रीबाबा महाराज का जो अगाध दृढ़ विश्वास है, उस विश्वास के कारण ही इतना बड़ा गो सेवा का अभियान चल रहा है, नहीं तो जो लोग गो सेवा में लगे हैं, उनसे पूछो तो पता चलेगा कि आज के समय में कितनी कठिनाई है, कितनी मँहगाई है और सबसे बड़ी समस्या तो यह है कि ग्वारिया नहीं मिल रहे हैं, गो सेवक नहीं मिल रहे हैं । हर गोशाला को इस समस्या से जूझना पड़ता है और इस भयंकर समय में

माताजी गोशाला में इतनी विराट गो सेवा हो रही है, यह निश्चित ही श्रीराधारानी की अपार कृपा है । जैसे ब्रज में वृषभानु बाबा का गोष्ठ सबसे बड़ा था, उसी प्रकार आज भी ब्रज में माताजी गोष्ठ सबसे बड़ा है । ब्रज में क्या, पूरे भारतवर्ष में एक ही स्थान पर इतनी संख्या में गायें केवल ब्रज में, बरसाना धाम में माताजी गोशाला में हैं । यह कितने सौभाग्य की बात है । हम तो आहावन करते हैं कि जब भी कोई ब्रज में आये, बरसाना धाम आये तो श्रीजी का दर्शन अवश्य करे और करना ही चाहिए, परन्तु श्रीजी उसके दर्शन को तब अंगीकार करेंगी जब माताजी गोशाला में प्रणाम करते हुए श्रीजी का दर्शन करेगा अथवा श्रीजी का दर्शन करके माताजी गोशाला में प्रणाम करे क्योंकि श्रीजी के दर्शन में तो मन्दिर कब खुलेगा, कब बन्द होगा, उसका समय है किन्तु हमारी गोमाता का ऐसा मन्दिर है जो चौबीसों घंटे खुला है । मन्दिर में तो दर्शन करने का एक समय है कि अब आरती होगी, अब राजभोग के बाद दर्शन बन्द, अब संध्या शयन आरती के बाद बन्द किन्तु गोमाता का ऐसा मन्दिर है, जो चौबीसों घंटे खुला हुआ है, अतः इसमें आकर दर्शन करें ।

अस्तु, नस्ल सुधार का इतना बड़ा उपक्रम हमारे ऋषियों ने बना दिया कि हर व्यक्ति एकादशाह के समय पर वृषभ उत्सर्ग करता था । पुराणों में लिखा हुआ है कि मन्दिर की स्थापना करे तो प्रत्येक देवता की मूर्ति के निमित्त पाँच गाय एक वृषभ के साथ देवता को दान करनी चाहिए अर्थात् उसी गाय के गव्य पदार्थ से देवता का अभिषेक और उसके नैवेद्य आदि की व्यवस्था हो तथा वृषभ से वहीं नस्ल का संवर्धन हो । यह 'प्रतिष्ठा प्रकाश' नामक ग्रन्थ में लिखा है । प्रतिष्ठा के साथ पाँच गायों के साथ एक वृषभ का विवाह करके तब देवताओं को देना चाहिए । देव निमित्त गोदान करना चाहिए और ऐसी परम्परा यदि देश में चालू हो जाए तो जो बड़े दुःख की बात है, बड़े दुर्भाग्य की बात है कि तिरुपति बालाजी के मन्दिर में जो दुर्घटना घटी कि अखाद्य अपवित्र वस्तु घी में मिलाकर, प्रसाद में मिलाकर न जाने कितने लोगों के धर्म को नष्ट किया गया, ऐसी घटनाएँ नहीं घटेंगी । बड़े दुःख की बात यह है कि इतनी बड़ी घटना घट जाने के बाद भी मन्दिर के व्यवस्थापन विभाग की ओर से, ट्रस्ट की ओर से क्या कोई खेद व्यक्त किया गया अथवा कोई निश्चित समाधान उन्होंने किया ? केवल इतना किया कि जिस कम्पनी के घी में शिकायत आई थी, अब कम्पनी दूसरी बदल दी । इन कम्पनियों में कितना अन्तर है ? उतना अन्तर है, जितना नागनाथ और साँपनाथ में अन्तर है । नागनाथ कहो चाहे सर्पनाथ कहो, बात तो एक ही हुई । हम क्या कहें, लोग हमारी बात मानेंगे नहीं । न मानें तो कोई बात नहीं, हम तो अपनी बात मान रहे हैं और मानेंगे । उसी देवालय का प्रसाद लें, उसी मन्दिर का प्रसाद लें, जिस मन्दिर में पूर्ण प्रतिज्ञापूर्वक वेदलक्षणा भारतीय देशी गाय के दूध-दही-घृत का नैवेद्य के रूप में प्रयोग होता है । यदि प्रयोग नहीं होता है तो वहाँ के प्रसाद को हाथ जोड़कर दूर से ही नमस्कार कर ले । तब तो धर्म बचेगा नहीं तो नहीं बचेगा । आप कहेंगे कि हम इतनी दूर गये और वहाँ से प्रसाद नहीं लाये तो हमारे घर वाले कहेंगे कि वहाँ गये तो प्रसाद लेकर नहीं आये, तब हम क्या करेंगे ? मेरा अपना ऐसा मानना है कि आप अपने घर से सुन्दर वेदलक्षणा देसी गाय के घी से, खोआ से बढ़िया मिठाई बनाकर भावना से ले जाओ और वहीं तुलसी दल पधराकर देवता चाहे रंगनाथ हों, चाहे जगन्नाथ हों, चाहे द्वारकानाथ हों, उन्हें अर्पित करो और कहो – 'जय जय प्रभो ! उस नैवेद्य में तो भरोसा नहीं, पता नहीं क्या है ? आप सर्वज्ञ हो और हम अल्पज्ञ हैं पर इस दीन-हीन गरीब की इस वेदलक्षणा गाय की वस्तु को आप नैवेद्य के रूप में स्वीकार करो । आपसे बड़ा गो भक्त और कौन होगा ?' मेरा विश्वास है कि ऐसा करने पर ठाकुरजी अत्यन्त रुचिपूर्वक उस नैवेद्य को स्वीकार करेंगे । उस प्रसाद को लेकर आप आओ । इतना भी यदि आपसे सम्भव नहीं है तो ब्रज में बलदेव ग्राम में दाऊजी हैं । उनके यहाँ बहुत मिसरी बनती है । वहाँ से दो-चार हड़िया मिसरी की ले जाओ । उसमें तो कोई मिलावट होती नहीं है । उसमें तुलसी दल पधराकर भोग लगा लो । लम्बे समय तक वह खराब भी नहीं होगी । एक सन्त कहीं से मेरे पास आये और उन्होंने अमुक जगह का प्रसाद कहकर हमें मिसरी दी । हमने पूछा कि क्या वहाँ मिसरी का भोग लगता है ? सन्त ने कहा कि वहाँ मिसरी का भोग नहीं लगता है । वहाँ तो रसीद कटती है, तब प्रसाद मिलता है पर आपने एक बार प्रवचन में ऐसा कहा था कि गोव्रती प्रसाद लेना चाहिए तो गोव्रती प्रसाद का प्रबन्ध तो नहीं हो पाता, तब से हम यही करते हैं कि

जहाँ भी किसी तीर्थ-धाम में जाते हैं तो वहाँ दाऊजी से मिसरी लेकर जाते हैं और मिसरी भोग लगाकर ले आते हैं । हमने उन सन्त से कहा कि यह तो आपने बहुत अच्छा मार्गदर्शन कर दिया क्योंकि लोग कहेंगे कि व्यवस्था नहीं है तो हम क्या करें लेकिन मिसरी तो मिल जायेगी, ठाकुरजी को मिसरी का भोग लगा दें । क्या कमी है ? अयोध्या में श्रीराम लला की स्थापना हुई है, दिव्य मन्दिर बना है । वहाँ पूर्ण गोव्रती प्रसाद सबको मिले, इसकी व्यवस्था हो तो मन्दिर ट्रस्ट के पास क्या कमी है, लेकिन बड़ी पीड़ा, बड़े दुःख की बात है कि वहाँ भी गोव्रत वाली व्यवस्था अब तक नहीं है । हम तो चाहते हैं कि जितना विशाल राम मन्दिर बना है, उससे भी विशाल रामलला की गोशाला होनी चाहिए और उस गोशाला के ही दही-दूध-घृत का प्रयोग रामलला की सेवा में होना चाहिए । उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री योगीजी और देश के प्रधान मन्त्री मोदीजी – इन दोनों को इस विषय पर ध्यान देना चाहिए, नहीं तो वह दिन दूर नहीं कि जो दुर्घटना तिरुपति बालाजी के मन्दिर में घटी, वही दुर्घटना कभी अयोध्या में भी घट सकती है । मेरी तो प्रार्थना है कि श्रीजी मन्दिर में भी सभी गोस्वामियों को, सभी श्रीजी के पुजारियों को श्रीबाबा महाराज की सन्निधि में बैठाकर उनको इस प्रकरण से सीख लेकर प्रार्थना करनी चाहिए कि आप खूब छप्पन भोग धराओ पर देसी गाय के दूध-दही-घी से ही भोग धराओ । यह निश्चय कर लो, भले ही उसकी मात्रा थोड़ी कम हो । जो भक्त श्रीजी को भोग लगवा रहा है, क्या वह शुद्ध देसी गाय के घी का पैसा नहीं देगा, ज्यादा नहीं लगा पायेगा तो थोड़ा लगाएगा, पर शुद्ध भोग तो लगेगा । नन्दगाँव के गोस्वामी भी यही निर्णय करें, वृन्दावन में बिहारीजी के गोस्वामी भी यही निर्णय करें । कम से कम हमारे ब्रज के प्राचीन मठ-मन्दिरों के लोग तो यह निर्णय करें । तिरुपति बालाजी मन्दिर की दुर्घटना से प्रेरणा लेकर हम अपने आराध्य को विशुद्ध भारतीय देसी गाय के पदार्थों से, दूध-दही-घी से बने पदार्थ ही भोग लगायेंगे तो धर्म बच जायेगा । अस्तु, नस्ल संरक्षण का कितना बढ़िया काम ऋषियों ने बताया है । नील वृषभ की कथा का छप्पय छन्द इस प्रकार है –

शिव शंकर गोलोक में, नील वृषभ ह्वै अवतरे ।
ऋषियों के अपराध, शम्भु गोलोक सिधाये । सुरभी देह प्रवेश, वत्स सुरभी ने जाये ॥
शिव बिन हाहाकार, देव गोलोक सिधाये । दिव्य सूर्य सम नील, वृषभ गायन बिच पाये ॥
चक्र शूल अंकित वृषभ, दान महातम विस्तरे । शिव शंकर गोलोक में, नील वृषभ ह्वै अवतरे ॥

शंकरजी का एक नाम है वृषभध्वज । उनकी ध्वजा (झण्डी) पर नन्दी का चिह्न है । शिवजी का दूसरा नाम है 'वृषभांक' । वृषभ के चिह्न से ही शंकरजी की पहचान है और उनका वाहन भी वृषभ है । भगवान् शिव को गायों ने पशुपति कहा । शिव पुराण में लिखा है – '**ब्रह्माद्याः स्थावरान्ताश्च पशवः परिकीर्तिताः ।' 'तेषां पशूनां पतिः पशुपतिः'**

वेद में लिखा है कि 'पाशुपत व्रत' पशुपाश के विमोक्षण के लिए है, जीवत्व के बन्धन से मुक्त होने के लिए है ।

सृष्टि की आधार है – श्री गौमाता ।

ब्रजरक्षा व गौरक्षा से ही देश व विश्व की सुरक्षा होगी । गौ-खिरक को ही ब्रज कहा गया । ब्रज का एक नाम गोकुल भी है इस गोकुल ने ही कन्हैया को गोपाल बनाया, गोविन्द बनाया । गौ-चर्चा ही ब्रज-चर्चा का पूरक है अतएव इसकी अतिशयावश्यक चर्चा यहाँ की जा रही है । "यत्र गावो भूरिश्रृंगाः अयासः" (ऋग्वेद.१/१५) जहाँ गाय हैं, वहीं ब्रज है । "व्रजन्ति गावो यस्मिन् स व्रजः ।" भूमि के सप्त आधार स्तम्भों में से प्रथम स्तम्भ है – गौ माता ।

गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च सतीभिः सत्यवादिभिः । अलुब्धैर्दानशीलैश्च सप्तभिर्धार्यते मही ॥

(स्कन्दपुराण ४/२/९०)

बाबाश्री-स्तोत्रम्

रचनाकार - पंडित श्रीबटोही झाजी, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, लखनऊ परिसर (साहित्य विभागाचार्य) खराज 'दरभंगा' बिहार

राधा राधा प्रतिपलगाता, जयति श्रीरमेशबाबाः ॥

सृष्टौ लोकचतुर्दशमध्ये भूलोकोऽस्ति विशिष्टः । पुण्यापुण्यकर्मफलभोगो लोकोऽन्यः संघटितः ॥१॥
भोगसहितनवकर्म विधातुं भूलोकः परमेषः । अपि भूलोके भारतभूमिः पुण्यवती संकलिता ॥२॥
अत्राऽयोध्या-मथुरा-मायाप्रभृतिः सप्त नगर्यः । नियतमुक्तिदायिन्यः प्रोक्ताः शास्त्रे सत्पात्राणाम् ॥३॥
अथ मुक्तेरपि भक्तिः श्रेष्ठा, ततोऽपि भक्तिः प्रेमा । तद्दायिक्षेत्रेषु ख्यातं भारतभूव्रजमेतत् ॥४॥
मथुरा-गोकुल-नन्दग्रामश्रीवृन्दागिरिराजाः । एतन्मधुरक्षेत्र-प्रेष्ठं वरसानुश्रीक्षेत्रम् ॥५॥
कथमिह सानुषु वराभिधानं वरसानुश्रीक्षेत्रम् । मधुरमधुरमधुरश्रीप्रेमाऽऽकृतिमूर्तिस्त्विह निवसति ॥६॥
मधु ब्रह्म राति स्फुरति स्फुट,- मात्मनि यदनुग्रहतः । रा - राति ज्योतिर्धा - धत्ते मधु तन्मधुरा राधा ॥७॥
तद् राधा ब्रह्माण्डमधुरिमा, यन्मधुकृष्णाऽऽधारा । व्रजधरणीमध्ये वरसानोस्तस्माद् वरसानुत्वम् ॥८॥
तन्मधुनामलपन-रूपस्मृति-तल्लीलादर्शनमिह । तन्मधुरस्थलसेवनमच्छव्रतमवाप्तममुनाऽलम् ॥९॥
रकार-राधा - मा-माधव इति रमायुगलमेतस्य । ईशत्वं परमाऽऽराध्यत्वं गतमत एष रमेशः ॥१०॥
बवयोरभेदो वेति विकल्पः, तद्द्वयघटनादस्मिन् । रमेशता-संकल्पो घटते, तदसौ रमेशबाबाः ॥११॥

इस सृष्टि में चौदह भुवनों में यह 'भूलोक' अत्यन्त विशिष्ट है, जिसमें पुण्य-अपुण्य, धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य का फल भोग करने का ये स्थान है (भोग सहित नवकर्म विधान हेतु यह भूलोक है) और उसमें भी इस भूलोक में 'भारत' की धरती अत्यन्त पवित्र है, पुण्यवती है । उस भारत की धरती में भी सप्त पुरियाँ – अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, काञ्ची, अवन्तिका, पुरी (द्वारावती) इत्यादि हैं, जो मोक्ष देने वाली हैं । उन सप्त पुरियों में 'मथुरा' सबसे श्रेष्ठ क्यों है ? क्योंकि मथुरामण्डल (ब्रजमण्डल) में भक्ति निरन्तर युवती रहती है । 'धन्यं वृन्दावनं तेन भक्तिर्नृत्यति यत्र च ।' प्रेमलक्षणा रसरूपा भक्ति की प्रतिष्ठा के कारण यह 'ब्रजमण्डल' सर्वोपरि है और उस ब्रजमण्डल में भी मथुरा से श्रेष्ठ गोकुल, नन्दगाँव, वृन्दावन, गिरिराज और उनमें भी रस की, मधुरिमा की अधिष्ठात्री रसेश्वरी राधारानी का 'बरसाना' सर्वोपरि है । इसका नाम है – वरसानु, 'सानु' माने शिखर, इससे उत्तम शिखर और कहाँ होगा इस ब्रह्माण्ड में, जिसके शिखर पर साक्षात् परम प्रेमस्वरूपा श्रीलाडलीजी विराजती हैं । इसलिए इसका नाम 'वरसानु' है । इसमें अत्यन्त मधुर-मधुर प्रेम का स्वरूप 'श्रीराधारानी' यहाँ निवास करती हैं । मधुर ब्रह्म श्रीकृष्ण की प्राप्ति जिनकी कृपा के बिना सम्भव नहीं है और उस माधुर्य रस की प्रकाशिका 'श्रीराधा' हैं । उन श्रीराधारानी के नाम का कीर्तन करना, भाव से गाना, उनके स्वरूप की स्मृति में डूबे रहना, उनकी लीलाओं में निरन्तर निमग्न रहना; यह स्वभाव है जिन पूज्य श्रीबाबामहाराज का, यह व्रत है पूज्य बाबामहाराज का; आज राधारानी के, युगल सरकार के नाम-रूप-लीला-धाम का जिनमें निरन्तर प्रकाश हो रहा है; ऐसे परम पूज्य श्रीबाबामहाराज की हम सबको सन्निधि मिली हुई है, उनका मंगलमय दर्शन हमलोगों को हो रहा है; मानो श्रीयुगल के नाम-रूप-लीला-धाम का साक्षात् विग्रह हमारे सामने विराजमान है । अब बाबा के नाम की व्याख्या करते हैं – श्रीराधामाधव जिनके प्राणाराध्य इष्ट हैं ऐसे परम पूज्य 'श्रीरमेश बाबा' । 'रमा+ईश, र – राधा, मा – माधव' ये युगल ही ईश 'परमाराध्य' हैं जिनके, अतः ये रमेश हैं । ब एवं व में अभेद माना गया है । बाबा-वावा, वा विकल्प, विकल्पद्वय से संकल्प; 'श्रीराधामाधव युगल ही परमाराध्य' ऐसा संकल्प होने से ये 'रमेशबाबा' हैं ।

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः ।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत् ॥ (गीतामाहात्म्य -६)

समस्त उपनिषद् गायें हैं और 'गोपालकृष्ण' गोपालन व गोदोहन करने वाले ग्वारिया हैं, उन्होंने 'अर्जुन' को बछड़ा बनाकर 'गीता' रूपी अमृत का दोहन कर 'अर्जुन' के माध्यम से सम्पूर्ण जगत् को 'गीतामृत' का पान कराया ।

श्रीमुरलिकाजी द्वारा लिखित कथानक (श्रीकृष्णजन्माष्टमी – २६/८/२०२४)

सद्गुरुजनों की दूरदर्शिता पर संदेह किए बिना उनके आज्ञापालन में ही जीव का परम कल्याण है । आज इसी आज्ञा-पालन के फलस्वरूप एक रोमांचकारी अनुभव हम चार लोगों (राधाकांत भैया जी, संजीव जिंदल चाचा जी, मुरलिका, नीलमणि) ने किया । राजस्थान प्रान्त के टोंक जिले में भक्तमाल के श्रेष्ठ भक्त धन्नाजी की भूमि में मानो आज साक्षात् धन्ना भक्त के ही दर्शन हुए । बरसाना से जयपुर की ओर.. शहरी वातावरण को पार करते हुए हम लोग 'घाटी' नामक किसी स्थान को खोज रहे थे । किसी को पता नहीं था कि ये कोई गाँव होगा या शहर ?

तभी हम एक पर्वत की घाटी उतरने लगे, वृक्षों और झरनों से सुरम्य यह प्राकृतिक सौन्दर्य .. दूर-दूर तक हरे-भरे खेत और उनमें भरा हुआ बारिश का जल मन को बड़ा सात्विक आनन्द दे रहा था । घाटी उतरते ही गाँव में हम लोग 'रतनलाल' नामक व्यक्ति का पता पूछने लगे । गाँव के भोले-भाले लोग हमारी ओर सहयोग की दृष्टि से देखकर बोले कि यहाँ तो बहुत-से रतनलाल हैं, किस रतनलाल को ढूँढ़ रहे हैं ? मन में कभी-कभी भय भी होता था कि कहीं कोई बहका तो नहीं रहा है हमें... किसी तरह रतनलालवर्माजी के ठिकाने पर गाड़ी पहुँची । दरवाजे पर अत्यन्त साधारण वेष में एक दम्पत्ति खड़े थे, जिनकी आँखों में इंतजार, खुशी और भावुकता भरी हुई थी... हम चारों लोगों को साष्टांग प्रणाम करते हुए वे हमें घर में भीतर लेकर गये । अत्यन्त साधारण-सा घर, जिसमें एक कक्ष में दो खटियाओं पर हम लोग बैठ गए, तभी बिना किसी इंतज़ार के एक file हमारे हाथ में रखते हुए रतनलालजी ने कहा कि ये मेरे जीवन भर की कमाई है । मैं एक गरीब मजदूर हूँ । मैंने और मेरी पत्नी ने बीस रुपये रोजाना में बहुत मेहनत से यह धन (एक जायदाद जिसकी कीमत एक करोड़ रुपये है) कमाया है, जिसे हम ठाकुर श्रीमानबिहारीलालजी के मंदिर की जीर्णोद्धार-सेवा में लगाना चाहते हैं । हमारा ३० वर्षीय इकलौता बेटा था, जो अब नहीं रहा....। हम अपने पास केवल दाल-रोटी का पैसा रखते हैं, बाकी सब गौसेवा में लगा है; यह सब कहते हुए दम्पत्ति के मुख पर बड़ा संतोष झलक रहा था । हमारे मन में भी कौतूहल था कि आखिर मानमन्दिर की जानकारी इन्हें कहाँ से मिली ? जब पूछा गया तो रतनलालजी ने कहा मैं निरन्तर कथा सुनता हूँ, मैंने अनेकों श्रेष्ठ संतों को सुना । दस वर्ष पूर्व टीवी पर साध्वी मुरलिकाजी की कथा सुनी और टीवी से ही एक नम्बर अपनी डायरी में लिखा । दो महीने पहले उस नम्बर के द्वारा मैंने श्रीमानमन्दिर में सम्पर्क किया और यहाँ के प्रचारकों की कथा का शुल्क (फीस) जानने की कोशिश की, तब राधाकान्त भैयाजी के द्वारा मुझे यह जानकारी मिली कि मानमन्दिर के प्रचारक पैसा नहीं लेते हैं; इतना सुनते ही मुझे लगा, बस यही वह स्थान है, जहाँ मुझे अपनी खरी कमाई को पूरी तरह से समर्पित कर देना चाहिए और आज मेरा यह संकल्प पूरा हुआ; ऐसा कहकर भक्त रतनलालजी ने एक file हमारे हाथों में थमा दी । तब हम सबको लगा कि यही है वह दैवीय द्रव्य, जो बिना माँगे आता है और सीधे भगवद्-सेवा के कार्य में लग जाता है । ऐसा द्रव्य न केवल सेवा में उपयोगी होता है बल्कि लोक का कल्याण करता है । 'सात्विक दान' दाता (देने वाला) और गृहीता (लेने वाला) दोनों का कल्याण करता है । श्रीबाबामहाराज का बताया हुआ सिद्धान्त फिर से पुष्ट हुआ – धर्मार्थमपि नेहेत....(भागवत)

अर्थात् धर्म के लिए भी धन की इच्छा मत करो । इच्छा रहित वृत्ति 'अनीहा' एक दैवीय शक्ति है, जो सब कार्यों को पूरा कर देगी । पूज्य श्रीबाबामहाराज की 'अनीहा' से ऐसे दिव्य भक्तों का विशुद्ध सात्विक धन श्रीमानमन्दिर के जीर्णोद्धार में लग रहा है, जो निकट भविष्य में एक बहुत ही दिव्य व भव्य स्वरूप में हम सबके सामने होगा और सदियों तक यह असाधारण स्थान संसार को इसी तरह आलोकित करता रहेगा ।

भक्त रतनलालजी की सादगी, सरलता और उत्कट समर्पण तो मन को प्रभावित कर ही रहा था, उनकी भक्तिमती स्त्री का समर्पण उनसे भी श्रेष्ठ महाराज बलि की पत्नी विंध्यावली के जैसा था, जिसमें अपने पति के निर्णय पर न कोई प्रश्न था, न विरोध और न ही किसी प्रकार का दुःख । यह सहधर्मिणी साक्षात् देवी लग रही थी ।

फिर तो केवट की तरह दम्पत्ति ने चरण धोए और हमारे सामने ही वह पूरा लोटा गट-गट-गट पी लिया । उस दम्पत्ति का यह सब कृत्य हम सबकी आँखें बड़ी कर रहा था.....फिर थोड़ी देर हम लोगों ने नाम-संकीर्तन किया.....चलने की अनुमति लेने लगे तो बोले बिना कुछ खिलाए नहीं जाने दूँगा ।

फिर तो शबरी की तरह फल ले आये । एक बड़ी परात में बहुत से केले, सेब, मिष्ठान्न हमारे सामने रख दिये और मुँह से निकली हुई जूठन के लिए मचल गये । आखिर में फिर छत पर दो छोटे-छोटे कमरों में ले जाकर फिर से चरण धोए... हम सबके मन में आश्चर्य बढ़ रहा था... इतने साधरण वेष में बिना किसी प्रदर्शन और बिना किसी अपेक्षा के अपना सब कुछ समर्पित कर देना... बस यही तो भक्तमाल के वे अमर भक्त हैं, जो सदियों के लिए पढ़े जाते हैं, सुने जाते हैं और उदाहरण के रूप में याद किए जाते हैं।

वस्तुतः भक्ति के लिए धनिक (सेठ) होना आवश्यक नहीं है वरन् हृदय में भक्तिमय भाव (सच्चा त्याग-समर्पण) होना ही सबसे बड़ी वस्तु है, जो भगवान् को भी वश में कर देती है; ऐसे परम भावुक भक्तजनों के तन-मन-धन के दर्शन-स्मरण-आस्वादन के लिए स्वयं श्रीभगवान् सतत् लालायित रहते हैं ।

धन्य हैं..... ऐसे सर्वात्मसमर्पित भक्त 🙏

श्रीब्रजरज की असीम-अनुपम महिमा

श्रीआद्य शंकराचार्यजी

शंकरावतार आद्य शंकराचार्य जी ने जिस समय भारत भूमि में भक्ति की पुनीत मंदाकिनी प्रवाहित की, जिससे जन-जन का मानस पंकज आप्लावित हो गया । आपके कृष्णभक्ति प्रचार-प्रसार के विषय में भक्तमालजी के प्रणयनकर्ता श्रीनाभाजीमहाराज कहते हैं – **"कलियुग धर्म पालक प्रगट आचारज शंकर सुभट"** एवं भक्तमाल जी के प्रसिद्ध टीकाकार श्रीप्रियादासजी का कथन है – **"विमुख समूह लैके किये सनमुख स्याम अति अभिराम लीला जग विसतारी है ।"** अपने सुदिव्य प्रभाव से भगवद् विमुखों को हरि भक्त (वैष्णव) बना दिया । नास्तिक वाद का खंडन करके कृष्ण लीला का विस्तार किया । आपके द्वारा रचित "भज गोविन्दं भज गोविन्दं" (चर्पट पंजरिका) मोहमुद्गर में तो आद्य शंकराचार्यजी ने ब्रजराज श्रीकृष्ण की भक्ति का प्रतिपादन करते हुए कृष्णभक्ति की शिक्षा पर विशेष प्रकाश डाला एवं "प्रबोध सुधाकर" नामक ग्रन्थ में तो आपने स्पष्ट रूप से परतत्व के रूप में साक्षात् श्रीकृष्ण की ही महिमा का निरूपण किया है – **यद्यपि साकारोप्यं तथैकदेशी विभाति यदुनाथः । सर्वगतः सर्वात्मा तथाप्ययं सच्चिदानन्दः ॥** (प्रबोध सुधाकर) भारत अटन करते हुए जब आप शिष्यों सहित ब्रज भूमि के निकट आये तो एक विलक्षण नियमोल्लङ्घन आपने किया । यात्रा काल में जहाँ भी आचार्य पाद विराजते, आसीन होने के पूर्व सेवक शिष्यों द्वारा उतना भूमि भाग खोदा जाता, लीपा जाता, जल से सिंचित किया जाता, रज शुद्धि की दृष्टि से किन्तु जब ब्रज देश की ओर बढ़े तो आद्याचार्य ने भूमि-खनन निषेध कर दिया । शिष्य समाज विस्मयान्वित था, गुरुदेव को क्या हो गया है? चलो भूमि खनन नहीं तो भूमि मार्जन तो कर दें । परिमार्जित भूमि पर आसीन हो गये । ब्रज के और निकट पहुँचे तो भूमि मार्जन भी निषेध कर दिया, जल सिंचित भूमि पर बैठ जाते । ब्रज की पावन अवनि में जब प्रवेश हुआ तो रसमय ब्रह्म के नवीन फेन से फेनिल हो उठा हृत्पटल, "अब जल सिंचन की भी आवश्यकता नहीं है" कहकर चारों ओर ब्रज रज में लोटपोट होने लगे । शिष्य वृन्द – "गुरुदेव ! आप यह क्या कर रहे हैं ? " शिष्यों के पूछने पर कृष्ण भाव-भावित यति की वाणी मुखरित हो उठी एवं उत्तर रूप में बहुत सुन्दर गोविन्दाष्टक गाया – **"गोष्ठप्राङ्गणरिङ्गणलोलमनायासं परमायासम्"** (गोविन्दाष्टकम्) "अरे, ब्रह्मचरणकंज की किंजल्क कणिका से अभिषिक्त यह शुचितम ब्रज रज सुरेन्द्राद्यभिलषित है ।" (देवता भी जिसे चाहते हैं) ।

श्रीवल्लभाचार्यजीमहाराज

चौरासी वैष्णववार्ताजी में पुष्टि सिद्धान्ताचार्य "श्रीवल्लभ महाप्रभुजी" ने भी यही मत सुस्पष्ट प्रकट किया ।

एक समय आचार्यपाद ब्रज में पधारे, साथ में भगवदीय प्रभुदास जलोटा थे । श्री गोवर्धन में आकर गोपाल लाल को स्थल भोग लगाया एवं प्रभुदास जी को आज्ञा की –

"यह प्रसाद आप पा लो ।" प्रभुदास जी बोले – "जै जै ! मैंने स्नान नहीं किया है ।" सुनकर आचार्यपाद सस्मित मुख बोले – **वृक्षे वृक्षे वेणुधारी पत्रे पत्रे चतुर्भुजः ।**
यत्र वृन्दावन तत्र लक्ष्यालक्ष्यकथा कुतः ॥
जलादपि रजः पुण्यं रजसोऽपि जलं वरम् ।
यत्र वृन्दावनं तत्र स्नात्वास्नात्वाकथा कुतः ॥

(चौरासी वैष्णववार्ता)

ब्रज स्वरूप लोचन गोचर कराया – "प्रभुदास ! देखो यहाँ वृक्ष वृक्ष पर वेणु धारी विराजमान हैं एवं प्रत्येक पत्र पर चतुर्भुज (ऐश्वर्यमय दर्शन) वृन्दावन में ग्राह्य-त्याज्य ही निषिद्ध है, जल से रज श्रेष्ट है और रज से जल । अतः यहाँ स्नान-अस्नान विचारणीय नहीं है, लो यह प्रभु प्रसाद ग्रहण करो ।" आचार्यपाद ने बिना स्नान किये ही प्रभुदास जलोटा को प्रसाद पाने की आज्ञा दी – **तावङ्घ्रियुग्ममनुकृष्य सरीसृपन्तौ घोषप्रघोषरुचिरं व्रजकर्दमेषु । तन्नादहृष्टमनसावनुसृत्य लोकं मुग्धप्रभीतवदुपेयतुरन्ति मात्रोः ॥** (श्रीभागवतजी १०/८/२२) इस रज में परब्रह्म मैया द्वारा स्नान कराने पर भी लुटलुटी लगाता है फिर अन्य कोई कर्मकाण्ड विचार की कहाँ आवश्यकता ?

.....

सबसौं सुन्दर है बरसानों ब्रज में राधा रानी कौ ॥

जहाँ बिराजैं राधा रानी,
जाकी श्याम करैं अगवानी,
महिमा वेदन हू नाय जानी,
पर्वत ऊपर मन्दिर चमकै सब जग जानी कौ ।
खोर साँकरी बड़ी रसीली,
दधि लै चलीं कुँवरि गरबीली,
सखियाँ संग में बहुत हठीली,
आगे मोहन गैल रोक दियौ रूप लुभानी कौ ।
दैजा दान कुँवरि रसिया कौ,
पीत पिछोरी कटि कसिया कौ,
कुँवरि हँसी लखि मन बसिया कौ,
घूँघट में ते छीन लियौ मन वा मनमानी कौ ।
गहवर वन की लता-पतन में,
बिहरें राधा मोहन वन में,
फूले-फूले तन में मन में,
बड़े-बड़े सुर नर मुनि तरसैं या राजधानी कौ ॥

.....

यही करुणा करना करुणामयि मम अंत होय बरसाने में

यही करुणा करना करुणामयि,
मम अंत होय बरसाने में ।
पावन गहवरवन कुञ्ज निकट,
रज में रज होय मिलूँ ब्रज में ॥
जिस क्षण यह प्राण निकलने लगे,
जीवन हाथों से जाने लगे,
उस क्षण कुछ भी नहीं याद रहे,
बस ध्यान रहे श्री चरणों में ।
जिन पद की सेवा हरि करते,
निज कर से नित जावक धरते,
यदि उन चरणों की याद रही,
फिर क्या भय है मर जाने में ।
विकराल काल को देखूँगा,
अति मृत्यु कष्ट को झेलूँगा,
मर के भी दर नहीं छोड़ूँगा,
विश्वास यही मेरे मन में ।
मरना फिर जन्म यहीं लेना,
लख चौरासी का चक्कर है,
तब तक यह चक्कर चलता है,
जब तक आये न चरणों में ।
चाहे छूटे माता ईश्वरी,
चाहे छूटे पिता परमेश्वरा,
चाहे छूटे सब जीवन संगी,
पर आना है इन चरणों में ।
अंतिम क्षण जिसकी याद रहे,
उसकी ही प्राप्ति होती है,
हे नाथ तुम्हारा वचन यही,
सार्थक होवे श्रीचरणों में ।

कृष्ण भक्ति के चौंसठ अंगों में भी पाँच अंग मुख्य हैं यथा – नाम-संकीर्तन, भागवत-श्रवण, श्रीविग्रह की सेवा-पूजा, साधु संग और ब्रजवास ।

श्रीमाताजी गौशाला में सम्पन्न श्रीगौभक्तमाल कथा-महोत्सव

श्रीमाताजी गौशाला, बरसाना में नौ दिवसीय श्रीगौभक्तमाल कथा महोत्सव सविधि संपन्न हुआ जिसमें संत सम्मलेन का भी आयोजन किया गया । ब्रज के प्रमुख संतों ने भाग लेकर एक स्वर में गौरक्षा व यमुनाजी के शुद्धिकरण को लेकर कुछ अति आवश्यक प्रस्ताव पारित किये । सभी प्रस्तावों को ध्वनि मत से पारित कर भारत के प्रधानमन्त्रीजी व उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्रीजी को प्रेषित किया गया है । प्रस्ताव निम्नांकित हैं –

दिनांक: 08 **अक्टूबर** 2024

गो-रक्षा व श्रीयमुना-संरक्षण हेतु ब्रज के संतो द्वारा पारित प्रस्ताव

सेवा में -

आदरणीय श्रीनरेंद्रमोदीजी सम्मानीय प्रधानमंत्रीजी,

भारत सरकार

विषय: श्रीधाम बरसाना (मथुरा) के श्रीमाताजी गौशाला प्रांगण में सम्पन्न हुए संत-सम्मेलन के उपरान्त संतो द्वारा ध्वनिमत से गो व श्रीयमुनाजी की रक्षा हेतु पारित प्रस्ताव

आदरणीय महोदय,

उपरोक्त संदर्भ में निवेदन है कि 'श्रीमाताजी गौशाला' में आयोजित किए गए 'गौभक्तमाल महामहोत्सव' के मध्य आयोजित संत-सम्मेलन में उपस्थित वृहद् संत-समाज द्वारा आपके आकर्षणार्थ व क्रियार्थ निम्न अत्यन्त आवश्यक प्रस्ताव पारित किए गए हैं । कृपया इनका अवलोकन कर अविलम्ब इस संदर्भ में उचित और शीघ्र कार्यवाही करने का निर्देश प्रदान करें ।

गौरक्षा हेतु

१. गोवध पर राष्ट्रव्यापी प्रतिबंध लगे, इसके लिए केंद्र सरकार द्वारा आवश्यक अध्यादेश अथवा नया कानून बनाया जाए, गौ माता को अभिलंब संवैधानिक रूप से राष्ट्रीय माता घोषित किया जाए ।

२. तिरुपति मंदिर में जो दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटी है उस संदर्भ में हस्तक्षेप कर अविलंब कर उक्त मंदिर में गोशाला स्थापना व गौ माता के दुग्ध से निर्मित प्रसाद की व्यवस्था को सुनिश्चित किया जाए व साथ ही भारतवर्ष के सभी बड़े मंदिर एवं मठों को अपनी स्वयं की गौशाला स्थापित करनी होगी व मंदिर परिसर में केवल पंचगव्य का ही प्रयोग करना होगा, इस बात के लिए भी अध्यादेश लाया जाए ।

३. गोरक्षार्थ राष्ट्रीय गो रक्षा प्राधिकरण की स्थापना की जाए ताकि संपूर्ण भारत में गोमाता की सुरक्षा व संरक्षण को सुनिश्चित किया जा सके ।

४. देशभर में लाखों हेक्टेयर गोचर भूमि पर हो रहे अतिक्रमणों को अविलंब हटाया जाए, वह उक्त गोचर भूमि को गायों के गोचरण हेतु समर्पित किया जाए । इसके लिए भी आवश्यक नियमावली व संवैधानिक विभाग का सृजन किया जाय ।

ब्रज क्षेत्र में श्री यमुना जी की निर्मलता व अविरलता हेतु :

५. ब्रज क्षेत्र में श्रीयमुना जी की अविरलता हेतु हथिनी कुंड बैराज से ब्रज क्षेत्र तक पाइपलाइन डालकर पर्याप्त मात्रा में प्राकृतिक जल प्रवाह सुनिश्चित किया जाए ।

६. उत्तर प्रदेश में श्रीयमुना नदी के तल पर गिर रहे समस्त औद्योगिक व दूषित कचरों के नालों को अविलंब रोका जाए व प्रदूषण नियंत्रण के लिए ZLD (जीरो लिक्विड डिसचार्ज) आदि मानदंडों का सख्ती से पालन किया जाए । इस हेतु स्वतंत्र रूप से समर्पित 'राज्य यमुना संरक्षण बोर्ड' का गठन किया जाए व इस बोर्ड में आवश्यक रूप से संतगण, पर्यावरणविद व यमुना भक्तों को भी नियुक्त किया जाए ।

आपसे विनम्र प्रार्थना है कि संतों की पीड़ा को समझते हुए उपरोक्त पारित किए गए प्रस्ताव को गंभीरता से लेकर इन सभी बिंदुओं पर शीघ्र ही आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश प्रदान करने का कष्ट करें ताकि भारतीयता, सनातन धर्म व हमारी संस्कृति का संरक्षण हो सके ।

प्रतिलिपि

आदरणीय **श्रीआदित्यनाथ योगीजी, सम्मानीय मुख्यमंत्री, उत्तरप्रदेश सरकार, लखनऊ**

श्रीमाताजी गौशाला बरसाना में गौ-रक्षा व श्रीयमुनाजी के संरक्षण हेतु सम्पन्न हुआ संत-सम्मलेन

दैनिक जागरण

उत्तराखंड, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, हरियाणा, बिहार, झारखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पश्चिम बंगाल से प्रकाशित

गोरक्षा और यमुना शुद्धिकरण करने वालों को दें वोट

संतों ने भरी हुंकार, बरसाना की माताजी गोशाला में चल रहा भक्तमाल महोत्सव

संवाद सूत्र, जागरण ● बरसाना: माताजी गोशाला में चल रहे नौ दिवसीय गो भक्तमाल महोत्सव में मंगलवार को संत सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें ब्रज के सभी प्रमुख संतों ने भाग लेकर एक स्वर में गोरक्षा और यमुना जी के शुद्धिकरण को लेकर कुल छह प्रस्ताव पास किए। सभी प्रस्तावों को ध्वनि मत से पारित कर प्रधानमंत्री और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री को प्रेषित किया गया है।

बरसाना स्थित माताजी गोशाला में संत सम्मेलन के दौरान मंच पर बैठे ब्रज के प्रमुख संत● जागरण

माताजी गोशाला में चल रहे गो भक्त माल महोत्सव के दौरान दौरान मथुरा, वृंदावन, गोवर्धन, बरसाना, नंदगांव, कामवन आदि सभी प्रमुख धार्मिक स्थलों से संत, महंत मंडलेश्वर मंदिरों की सेवायत और भागवताचार्य सैकड़ों की संख्या में एकत्रित हुए। सम्मेलन की अध्यक्षता महंत फूल डोल दास द्वारा किया गया। मलूक पीठाधीश्वर डा. राजेंद्र दास महाराज ने कहा कि जब सरकार राजस्थान के चुरू और झुंझुनूं तक 153 किलोमीटर तक पाइप लाइन से यमुना जल पहुंचा सकती है तो फिर हथिनी कुंड से ब्रज तक भी पाइप लाइन से शुद्ध यमुना जल देना चाहिए। पुष्टिमार्ग संप्रदाय के आचार्य पंकज बाबा महाराज ने कहा कि करीब 15 वर्ष से ब्रजवासी, संत, महात्मा, आचार्य यमुना शुद्धिकरण की लड़ाई लड़ रहे हैं। मगर सरकार केवल वादा करती है, उन्हें पूरा नहीं करती। इसलिए अब यमुना भक्तों को आने वाले चुनावों में यमुना के लिए अपने वोट के अधिकार से लड़ाई लड़नी होगी। यमुना में शुद्ध जल नहीं तो फिर सरकार को वोट नहीं। सम्मेलन में दिल्ली से आए विहिप के केंद्रीय समिति सदस्य और अखाड़ा परिषद के प्रवक्ता नवल किशोर दास महाराज ने कहा कि यमुना शुद्धिकरण और गोरक्षा के लिए लगातार आंदोलनरत रहना चाहिए। सुदामा कुटी के महंत सुतीक्ष्ण दास महाराज ने गोमाता की दुर्दशा के लिए आम जनता के भीतर भाव की कमी होना बताया। वल्लभ कुल संप्रदाय के आचार्य भूषण बाबा ने भी विचार व्यक्त किए। श्रीकृष्ण जन्मभूमि की लड़ाई लड़ रहे अधिवक्ता महेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि 27 नवंबर को मथुरा में धर्म संसद का आयोजन किया जा रहा है।

करीब चार घंटे चले संत सम्मेलन में प्रमुख रूप से लाडली शरण महाराज, वेदांत गिरी महाराज, महंत सच्चिदानंद दास, सुखदेव दास बाबा, जगल चरण दास, गोपेश कृष्ण दास, आचार्य सुमंत कृष्ण शास्त्री, रमेश चंद्र गोस्वामी, मौजूद रहे। संचालन आचार्य मृदुल कांत शास्त्री और सुशील गोस्वामी ने संयुक्त रूप से किया।

पश्चिमी
नेत्र
जाँ
• टोन

अमर उजाला

6 राज्य
2 केंद्रशासित प्रदेश
22 संस्करण

वर्ष 77 | अंक 174 | पृष्ठ : 24
मूल्य : सात रुपये

आगरा
बुधवार, 9 अक्तूबर 2024
आश्विन शुक्ल-षष्ठी
विक्रम संवत-2081

amarujala.com

टी-20 विश्वकप श्रीलंका के खिलाफ बड़ी जीत से कायम रहेंगी महिला क्रिकेट टीम की उम्मीदें...स्पोर्ट्स

उत्तर प्रदेश

मुहिम

बरसाना स्थित माताजी गोशाला में हुआ संत सम्मेलन

गोरक्षा और यमुना शुद्धिकरण को लेकर संतों ने भरी हुंकार

संवाद न्यूज एजेंसी

बरसाना। माताजी गोशाला में चल रहे नौ दिवसीय गो-भक्तमाल कथा में मंगलवार को संत सम्मेलन

लिए अपने वोट के अधिकार की लड़ाई लड़नी होगी। यमुना में शुद्ध जल नहीं तो वोट नहीं। विश्व हिंदू परिषद की केंद्रीय समिति के सदस्य नवल किशोर दास महाराज ने कहा

श्रीकृष्ण जन्मभूमि का मुद्दा भी उठाया गया। अधिवक्ता महेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि 27 नवंबर को मथुरा में धर्म संसद का आयोजन किया जा रहा है।

श्रीमाताजी गौशाला में सम्पन्न हुए श्रीप्रियालालजू
विवाह-महोत्सव की झलकियाँ

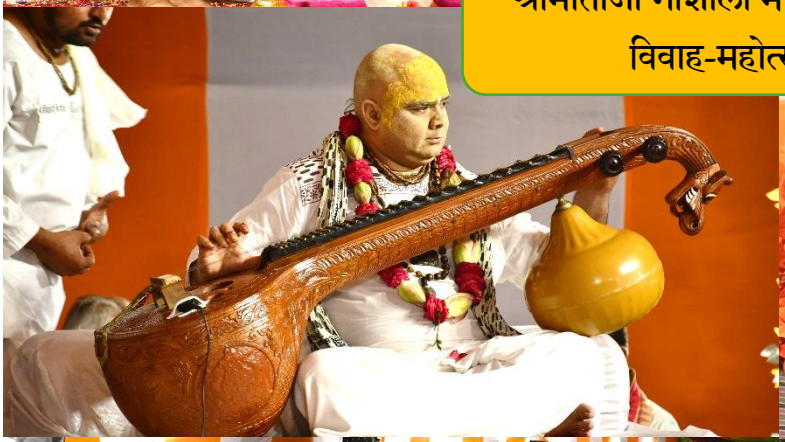

RNI REFERENCE NO. 1313397- REGISTRATION NO. UP BIL-2017/72945-TITLE CODE UP BIL-04953 POSTAL REGD.NO. 093/2024-2026 श्री मान मन्दिर सेवा संस्थान के लिए प्रकाशक/मुद्रक एवं संपादक राधाकांत शास्त्री द्वारा 'गुप्ता प्रिन्टिंग प्रेस, खरौट गेट, कोसीकलाँ, मथुरा. उत्तरप्रदेश' से मुद्रित एवं मान मन्दिर सेवा संस्थान, गह्वरवन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.) से प्रकाशित [AGRA/WPP-12/2024-2026 AT 31.12.26]